अप्रैल-मई, 1981
वर्ष 16 ❋ अंक 11-12
मूल्य 3.00

ज्ञा न मृ त

बंगाल-बिहार-उड़ीसा-आसाम मण्डप—कलकत्ता के विक्टोरिया की कपड़े में बनाई प्रतिमूर्ति इसमें पुरुषोत्तम संगमयुग का माहात्मय दर्शाया गया था।

इंग्लैंड—इसमें दिखाया गया था कि हम सम्पूर्णता तथा अव्यक्त अवस्था कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

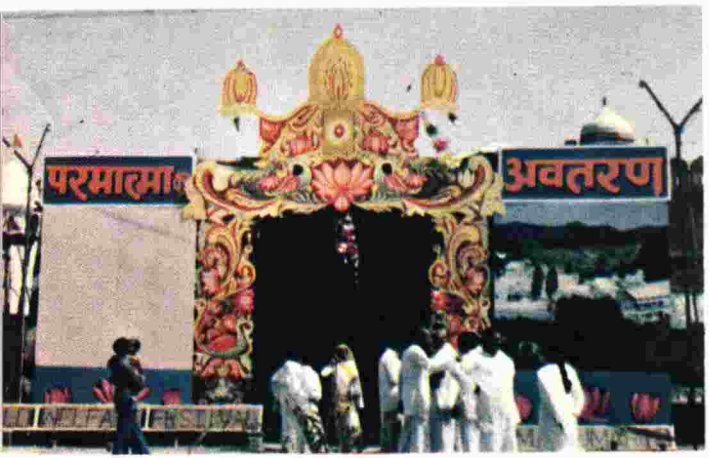

यू० पी० आगरा—विषय परमात्मा कब और किस मानवीय तन में अवतरित होकर विश्व-कल्याण करते हैं।

केन्द्रीय ध्वज—इसके चारों ओर एक-एक ईश्वरीय संदेश दिया था।

गुजरात—परमात्मा की स्मृति में स्थित होकर योग द्वारा आनन्दानुभूति।

मध्य प्रदेश—राजयोग द्वारा सभी व्यावसायिको कल्याण कैसे ?

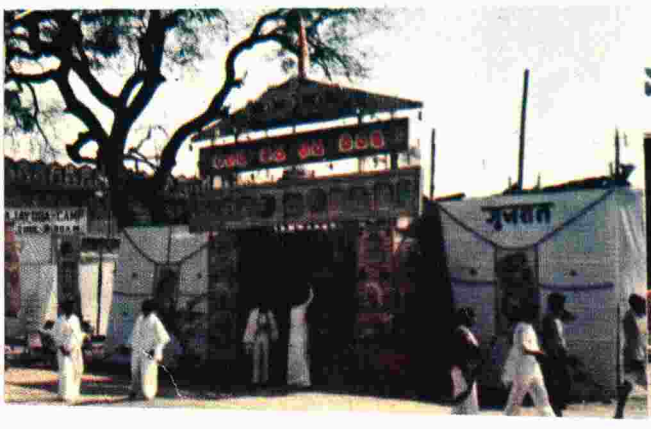

सम्पादकीय

विश्व-कल्याण महोत्सव

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा २४ फ़रवरी से ५ मार्च, १९८१ तक मनाये गये विश्व-कल्याण महोत्सव की छवि निराली ही थी। इस महोत्सव के मुख्यतः छः विशेष भाग थे। इनमें से एक मुख्य भाग अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के रूप में था। इस विशाल प्रदर्शनी में ईश्वरीय ज्ञान के महत्त्वपूर्ण विषयों को चित्रों, मूर्तकलाकृतियों (Models), छाया चित्रों, झाँकियों, दृश्यों, आदि के माध्यम से मनोरम विधि से स्पष्ट किया गया था। उन विषयों में से कुछेक निम्नलिखित हैं :—

१. प्रारम्भ में मानव असभ्य नहीं था बल्कि सभ्यता और संस्कृति अपने सर्वोच्य शिखर पर थे और दिव्य थे। वह प्रथम युग सतयुग था। उस युग में पूर्णतः दिव्य मर्यादा एवं शान्ति थी और लोग स्वभाव से ही विधिपूर्वक चलने वाले थे।

२. आत्मा शरीर से अलग है। वह चेतन और अनादि-अविनाशी है। वह आदि रूप में शान्त और पवित्र है। वह एक अत्यन्त सूक्ष्म दिव्य ज्योतिकण है जो मस्तिष्क में भृकुटि के बीच में निवास करती है।

३. प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ क्षणभंगुर और नाशवान है और जो कोई भी इनमें स्थायी आनन्द ढूंढता है, वह व्यर्थ ही परिश्रम करता है।

४. एक सत्यान्वेषी को जानना चाहिये कि यह संसार एक मुसाफ़िरखाना है और कि आत्मा इस लोक से परे एक अन्य लोक से आई है जिसे "ब्रह्मलोक" या "परलोक" कहते हैं। हम सभी को लौटकर उसी लोक में जाना है और हमारी वापसी यात्रा का समय निकट आ पहुँचा है।

५. संसार की वर्तमान सभी समस्याएँ, जैसे कि जन-संख्या में अतिवृद्धि, आर्थिक शोषण आदि, मनुष्य के देहाभिमान ही के कारण हैं और उनका स्थायी समाधान आत्मा-निश्चय के अभ्यास ही से तथा सभी को एक परमपिता की सन्तान परस्पर भाई-भाई मानने से हो सकता है।

६. समय-चक्र को जिन पाँच युगों में बाँटा जा सकता है, उनमें से वर्तमान समय बहुत ही महत्त्व-पूर्ण है। इसे "संगमयुग" अथवा "कल्याणकारी पुरुषोत्तम युग" भी कहते हैं। यह अनैतिकता और अनाचार की अति का अथवा धर्म-ग्लानि का समय है जबकि परमात्मा स्वयं विश्व का कल्याण करने के लिये इस सृष्टि में एक मानव के तन में अवतरित होते हैं जिसे वे "प्रजापिता ब्रह्मा" नाम देते हैं।

७. अब परमपिता परमात्मा अवतरित हो चुके हैं और एक मानव के तन के माध्यम से गुप्त रूप से अपना ईश्वरीय कृत्य कर रहे हैं और उस कार्य की गति दिनोंदिन बढ़ रही है।

८. काया-रहित ज्योति स्वरूप परमात्मा शिव ही प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा ईश्वरीय ज्ञान देते हैं जिसका नाम श्रीमद्भगवद् गीता होता है। इसके बाद ही सतयुग का अभ्युदय होता है जिसमें कि श्रीकृष्ण, जिन्हीं का नाम स्वयंवर के बाद श्री नारायण होता है, प्रथम विश्व महाराजन् होते हैं।

९. वास्तव में राजयोग ही एक मात्र ऐसी साधना है जिस द्वारा मनुष्य अपने पूर्व जन्म के विकर्मों से छुटकारा पाता है, अपनी वर्तमान आदतों को बदल सकता है, दिव्य गुणों की धारणा कर सकता है और आनन्द को प्राप्त कर सकता है।

१०. मनुष्य को अपने कार्य-व्यवसाय को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है बल्कि वह सामाजिक जीवन व्यतीत करते हुए भी राजयोग का अभ्यास कर सकता है और इस प्रकार अपने तथा विश्व के कल्याण में सहयोगी हो सकता है।

११. वर्तमान अपवित्र, भौतिकवादी संसार, जिसमें बड़े पैमाने पर विध्वंसात्मक अस्त्र बनाये जा रहे हैं और जिसमें जन-संख्या तथा अनेक प्रकार के प्रदूषणों में भयावह वृद्धि हो रही है, का अन्त निकट है और इसके स्थान पर अब सम्पूर्ण पवित्रता-सुख-शान्ति सम्पन्न सृष्टि प्रकट होने वाली है।

१२. कल्प पहले की भाँति अब भारतमाता शक्ति-दल अथवा शिव शक्तियाँ पुनः सजग होकर अति तीव्रगति से आसुरी संसार को दैवी संसार में परिवर्तित करने के कार्य में तत्पर हैं।

सम्मेलन

महोत्सव का दूसरा विशेष भाग था—अनेक प्रकार के सम्मेलन। ये सम्मेलन समाज के विभिन्न वर्गों के लिये आयोजित किये गये थे। विधिवेत्ता एवं न्यायविद् सम्मेलन, पत्रकार संगोष्ठी, डाक्टरों का परिसंवाद, शिक्षाविद्सम्मेलन, धर्म-नेता स्नेह-मिलन महिला सम्मेलन, विकलांगों के लिये कार्यक्रम—ये सम्मेलन इसी प्रकार के थे। दूसरे ऐसे सम्मेलन थे जो किसी विशेष वर्ग के न होकर सभी लोगों के लिये थे। उदाहरण के तौर पर "विश्व शान्ति एवं सद्भावना" विषय पर सम्मेलन तथा "राजयोग अभ्यास की क्रियात्मिक विधि" वाला सत्र और 'आध्यात्मिक जागृति' पर प्रवचन इसी प्रकार के सम्मेलन थे।

इन सम्मेलनों का उद्देश्य इस विषय पर चर्चा करना था कि हर वर्ग को नैतिकता की दृढ़ नींव तथा आध्यात्मिकता की पुट कैसे दी जा सकती है, सभी वर्ग विश्व शान्ति के लिये क्या योगदान दे सकते हैं तथा सभी मिलकर एक ऐसे समाज का निर्माण किस प्रकार कर सकते हैं जिसका आधार "बनो महान्, करो कल्याण"—महोत्सव में अपनाये गये नीति वचन हो।

३. राजयोग शिविर

विश्व-कल्याण महोत्सव का एक अन्य अंग थे—राजयोग शिविर। ये जन-जन को पवित्रता और शान्ति का क्रियात्मक लाभ कराने के लिये आयोजित किये गये थे। सभी को मालूम है कि आज के वातावरण में मानसिक तनाव है, लोगों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और मनुष्य की जीवन-पद्धति में शीघ्रता से परिवर्तन होता रहता है। अतः इस भौतिकता-प्रधान युग में मनुष्य को शान्ति-प्राप्ति का सहज मार्ग दर्शाने तथा, एक ऐसी सरल जीवन-विधि बताने की आवश्यकता है जिससे उसे आत्मिक सन्तोष मिले। यदि आज भी मनुष्य के जीवन को नैतिकता, आध्यात्मिकता और योग का रंग न दिया गया तो फिर और कौन-सा समय आएगा? यदि आज ही ये कदम न उठाया गया तब तो विज्ञान की शक्तियाँ नैतिकता के अंकुश से निकल कर आणविक अस्त्रों द्वारा संसार का ही विनाश कर डालेंगी।

अतः राजयोग शिविर सभी को क्रियात्मिक रूप से मन को शान्तिदाता परमपिता परमात्मा में स्थित करने और मन की चंचलता को आत्मानुशासन में लाने की विधि का प्रशिक्षण देने के लक्ष्य से आयोजित किये गये थे। सैंकड़ों ने इन शिविरों से लाभ लिया।

४. सांस्कृतिक कार्यक्रम

मंच पर अभिनय के रूप में जो भाव व्यक्त किये जाते हैं या सुरीले स्वर में गाकर जो विषय प्रस्तुत किया जाता है, उसे मनुष्य आसानी से नहीं भूलते। इसलिये आध्यात्मिक क्रान्ति, जिसके बीज हम हर घर तथा हर मानव-मन में बोकर जन-जन में जागृति पैदा करना चाहते हैं, के लिये हमें इन माध्यमों को अपनाना ज़रूरी है।

अतः महोत्सव में विविध रूपों में बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी रखा गया था। उनमें मन को परमात्मा के प्रेम से विभोर कर देने वाले गीत भी थे और पवित्र जीवन के लिये प्रबल प्रेरणा देने वाले नाटक भी और आत्मा का आनन्द तथा उल्लास से भर देने वाले दिव्य नृत्य भी।

महोत्सव में जितने भी सांस्कृतिक कार्यक्रम थे, वे व्यावसायिक (Professional) कलाकारों द्वारा नहीं बल्कि शौक से जन-जागृति लाने की भावना वाले भाइयों या बहनों द्वारा प्रस्तुत किये गये थे। वे राजयोगाभ्यासी ब्रह्माकुमारियाँ या ब्रह्माकुमार थे। अतः इन कार्यक्रमों की अपनी ही आभा थी। जो कोई भी इन कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए होंगे उन्हें पवित्र, महान एवं योग-युक्त जीवन के लिए अवश्य ही प्रेरणा मिली होगी और उनमें आनन्द के स्रोत परमात्मा से आनन्द-रस की अनुभूति पाने की उत्कण्ठा जागृत हुई होगी।

५. प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम

महोत्सव स्थल पर इसे सम्मेलन की मंच से अलग ही एक विशाल स्थान दिया गया था। इस लोकप्रिय माध्यम से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा विश्व-कल्याणार्थ परमात्मा शिव के दिव्य कार्यों का परिचय कराया गया था। इस कार्यक्रम को देखने के लिये लोग काफ़ी संख्या में इकट्ठे हो जाते थे। इसमें लोगों को एक वास्तविक परन्तु ऐसी अद्भुत जीवन-कहानी का परिचय मिलता था जिससे मनुष्य का जीवन पलट जाता है और अब तक हज़ारों लोगों के जीवन में पवित्र परिवर्तन आया है।

६. शोभा यात्रा और झाँकियाँ

देहली के प्रसिद्ध अम्बेदकर स्टेडियम में लगभग बारह हज़ार व्यक्ति इकट्ठे हुए और वहाँ उन्होंने कुछ समय सामूहिक रीति से सहज राजयोग का अभ्यास किया। उन सभी की मनोकामना थी परमात्मा शिव ही की महिमा का परिचय जन-जन को देना और उन्हें "पवित्र बनो तथा योगी बनो" नामक ईश्वरीय सन्देश देना।

तब सभी के मुख मण्डल पर हर्ष था—इसलिये नहीं कि वे स्टेडियम में कोई फुटबाल का खेल देख रहे थे, बल्कि इसलिये कि उनकी सुधि-बुद्धि परमात्मा में लगी थी और उनके मन में सब के भले की कामना थी, सभी के कल्याण के लिये सद्भावना थी। उनमें एक अनुशासन था और एक पारिवारिक स्नेह की अनुभूति थी। सभी श्वेत वस्त्र धारण किये हुए थे। हरेक के हृदय-स्थल पर एक सम्मेलन-चिन्ह लगा था जिस पर परमात्मा शिव की दिव्य आकृति अंकित थी। यत्र-तत्र-सर्वत्र शिव-ध्वज फहराता हुआ दिखाई देता था। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसे देखकर ऐसा आभास न होता हो कि यह शान्ति से क्रान्ति हो रही है।

देहली में इससे पूर्व के इतिहास में ऐसा जलूस, जिसमें हज़ारों की संख्या में सभी श्वेतवस्त्रधारी ही लोग हों, और इतने प्रदेशों, इतने विदेशों तथा महाद्वीपों के लोग (योगी लोग) सम्मिलित हों, कभी भी नहीं देखा गया होगा।

इस जलूस में बहनों और भाइयों ने जो वचन-पट (Placards), वस्त्र के सूचना-पट (Banners) तथा छोटे-बड़े ध्वज लिये हुए थे, उससे एक महान् आध्यात्मिक क्रान्ति ही का परिचय मिलता था। वे सभी एक ज्योतिस्वरूप परमात्मा और उसकी कल्याणप्रद शिक्षाओं ही का परिचय देते थे।

भारत में विभिन्न प्रदेशों तथा विश्व के अनेकानेक देशों में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेवा केन्द्र हैं, उन्होंने जो झाँकियाँ बनाई थीं, वे न केवल कलात्मक दृष्टि से उच्च कोटि की थीं बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी जागृति लाने वाली थीं। आज तक किसी एक ही संस्था द्वारा इतने उच्च स्तर की इतनी संख्या में झाँकियाँ कभी नहीं पेश की गयी होंगी। ईश्वरीय ज्ञान के जिन रहस्यों की ओर ये भव्य झाँकियाँ ध्यान आकर्षित करती थीं, वे भी अद्भुत थे। इन झाँकियों द्वारा वर्तमान समय के समाज का चित्र सामने आता था और वर्तमान की भित्ती पर भविष्य में जो-कुछ होने वाला है उसकी भी झलक मिलती थी और इनसे विश्व के सबसे अधिक विवादस्पद विषय—"परमात्मा का क्या परिचय है?"—इस पर भी प्रकाश मिलता था, और इनमें यह भी दर्शाया गया था कि नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्य अपनाने से विश्व की सभी विषम समस्याओं का कैसे हल हो सकता है।

आध्यात्मिक बम

यह शोभा यात्रा क्या थी, यह जन-जन को हार्दिक निजी निमन्त्रण था कि वे आयें और आकर देखें कि वर्तमान समय विश्व का कल्याण करने के लिये परमपिता परमात्मा क्या दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं। जिन लोगों ने महोत्सव के बारे में समाचार पत्रों में सूचना भी पढ़ने की ओर ध्यान नहीं दिया, उन्हें इतनी तो जानकारी हो ही गयी होगी कि ये लोग हमें निमन्त्रण दे रहे हैं कि आओ और आकर अपने परमप्रिय परमपिता परमात्मा से अपना ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करो। इस प्रकार इस शोभा

यात्रा और इन झाँकियों ने और कुछ नहीं तो कम-से-कम पाँच-सात लाख लोगों को ज़ोरदार तरीके से संदेश दिया ही होगा।

संक्षेप में, हर सम्भव तरीके से सोये मानव को प्रगाढ़ निद्रा से जगाने की कोशिश की गयी ताकि वह जागकर परमपिता परमात्मा, जो कि विश्व के कल्याण का दिव्य कार्य कर रहे हैं, के मधुर संदेश को सुने। फिर भी यदि कुछ ऐसे लोग हों जो सुनना, देखना या लाभ लेने के लिये निकट आना ही नहीं चाहते तो उनके लिये कोई कर ही क्या सकता है? वे तो ऐसी आत्माएँ हैं जो परमात्मा की बात भी नहीं सुनेंगी। वे ही तो ऐसी आत्माएँ हैं जिनके बारे में प्रथा ही से यह कहावत चली आती है कि जब "परमात्मा ने दिव्य बुद्धि तथा दिव्य सौभाग्य के वरदान दिये थे, तब भी वे सोये रहे थे और इन्हें प्राप्त करने के लिये चेष्टाहीन तथा पुरुषार्थहीन रहे थे।" वह दिन दूर नहीं बल्कि शीघ्र ही आयेगा जब इन लोगों को एहसास होगा कि उन्हें जगाने के लिये बहुत ही विशाल तथा ज़ोरदार प्रयत्न किये गये थे, उन्हें जगाने के लिये सायरन (Siren) या बिगुल नहीं बल्कि आध्यात्मिक बमों का धमाका किया गया था ताकि वे अपनी शताब्दियों-पुरानी देहाभिमान रूपी महानिद्रा से जागें, परन्तु अफ़सोस उन्होंने सुना ही नहीं।

क्या अब भी वे सहज ही हमें यह उलाहना दे सकेंगे कि हमने उन्हें परमप्रिय परमपिता के इस धरा पर अवतरित होने की सूचना नहीं दी थी या उस मालिक के आने की ख़बर हमने उन तक नहीं पहुँचाई थी? क्या अब भी उनके पास ऐसी कोई बात कहने को रह जाएगी कि हमने बहनों और भाइयों के इस विशाल महा-सम्मेलन में जहाँ परमात्मा के सुनहरी महावाक्यों की छवि छिटक रही थी, में आने का निमन्त्रण उन्हें नहीं दिया था?

हो सकता है कि हम कुछेक बहन-भाइयों के निवास या यातायात की वैसी सुन्दर व्यवस्था न कर पायें हों जैसी कि होनी चाहिए थी। इसका कारण यह था कि यह कलियुगी दुनिया है जहाँ शायद ही किसी की योजना शत प्रतिशत सफ़ल होती हो। परन्तु भगवान् साक्षी है कि हमने सारा दिल इस शुभकामना की अभिव्यक्ति में लगा दिया था कि प्रिय बहनें और भाई आयें और अनमोल ईश्वरीय रहस्यों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त करें। और, निस्सन्देह, कोने-कोने तथा दूर-दूर से सैंकड़ों-हज़ारों बहन-भाइयों ने अनेक प्रकार की असुविधाओं तथा कठिनाइयों को चुपचाप सहन करके भी हमें इस कार्य में सहयोग दिया ताकि जन-जन तक ईश्वरीय संदेश पहुँचे। और, कौन है जिसे यह विश्वास नहीं है कि एक दिन आयेगा जब विश्व के सभी लोगों में से विशेषकर देहली के लोग इस सत्यता की गवाही देंगे कि जन-मानस को परमात्मा के अवतरण तथा कर्तव्य का परिचय देने के लिए हमने कोई भी कोताही नहीं की थी और कसर नहीं छोड़ी थी।

और यह जो मुद्रित कृति आपके हाथ में है, यह इस दिशा में एक और कदम है ताकि देहली में या बाहर कहीं भी, कोई भी व्यक्ति जो किन्हीं व्यस्तताओं के कारण इस महोत्सव में सम्मिलित न हो सका हो, उसे अब इसके द्वारा परमपिता द्वारा हो रहे महान् कार्य का सुबोध हो सके और इस प्रकाशन के रूप में उसे यह दिव्य व प्रेम निमन्त्रण भी मिल सके कि वह ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के किसी भी सेवा केन्द्र पर पधार कर ईश्वरीय वरदानों से लाभान्वित हो।

—जगदीश

पत्रकार सम्मेलन—विश्व-कल्याण महोत्सव के शुभारम्भ से पहले एक पत्रकार सम्मेलन किया गया था। छवि में विभिन्न समाचार एजेन्सियों के प्रतिनिधि तथा देहली एवं प्रदेशों से छपने वाले दैनिक समाचार पत्रों के संवाददाता एवं पत्रकार दिखाई दे रहे हैं। आकाशवाणी के संवाददाता भी इस में सम्मिलित है। इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी का भी पूर्वा-लोकन कराया गया था।

विश्व-कल्याण महोत्सव का उद्घाटन—राज्य सभा के उपाध्यक्ष भ्राता श्याम लाल यादव महोत्सव का उद्घाटन कर रहे हैं। कैमरे के सामने खड़ी हैं पूर्वी क्षेत्र के ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की क्षेत्रीय इंचार्ज ब्रह्माकुमारी निर्मल शान्ता जी।

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनि ब्र० कु० प्रकाशमणि जी लाल किला मैदान पर शिव ध्वज को फहराने की रस्म अदा करने के पश्चात महाराष्ट्र मण्डप का उद्घाटन कर रही हैं।

विश्व कल्याण महोत्सव का उद्घाटन—महोत्सव के उद्घाटन के बाद मंच पर बैठे हैं बायें से दायें ब्र० कु० राजकुमार मित्तल देहली विद्युत प्रदाय में मुख्य कर्मशियल अधिकारी, राज्य सभा के उपाध्यक्ष भ्राता श्यामलाल यादव, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० प्रकाशमणि जी तथा नन्दन पत्रिका के सम्पादक भ्राता जय प्रकाश भारती।

अन्तर्राष्ट्रीय-मण्डप :—हाँगकाँग, जापान, सिंगापुर, मारीशस, गुयाना, फ्राँस, मैक्सिको आदि के ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने चित्र लगाए।

देहली मण्डप :—इस का विषय था, 'अन्धकार से प्रकाश की ओर'

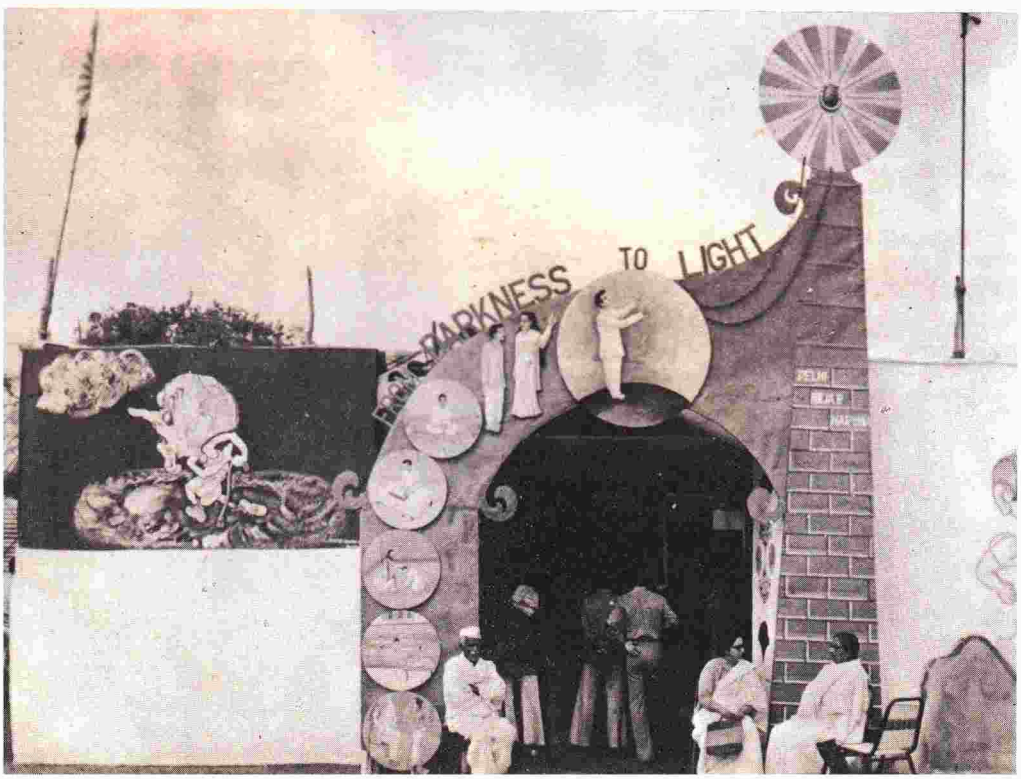

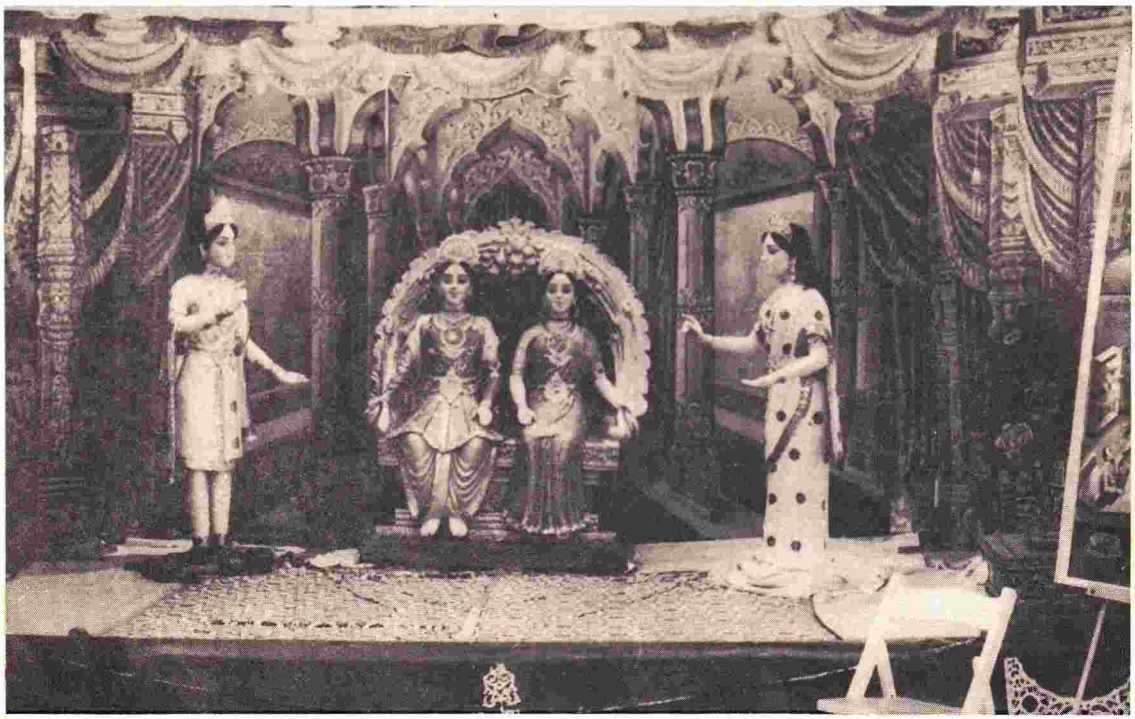

महाराष्ट्र—आदि काल में यह संसार स्वर्ग था और मनुष्य एक सभ्य एवंसुसंस्कृत प्राणी था, यह कोई जंगल या गुफ़ा में रहने वाला असभ्य जीव नहीं था जैसे कि विकासवादी कहते हैं। श्री लक्ष्मी और श्री नारायण विश्व के प्रथम महारानी और महाराजा थे।

करनाटक—एकता और स्नेह के अभाव में विश्व का विस्फोट हो रहा है। एक ओर अनियंत्रित महंगाई है और दूसरी ओर जनसंख्या में वृद्धि। भला सोचिये कि भविष्य क्या होगा।

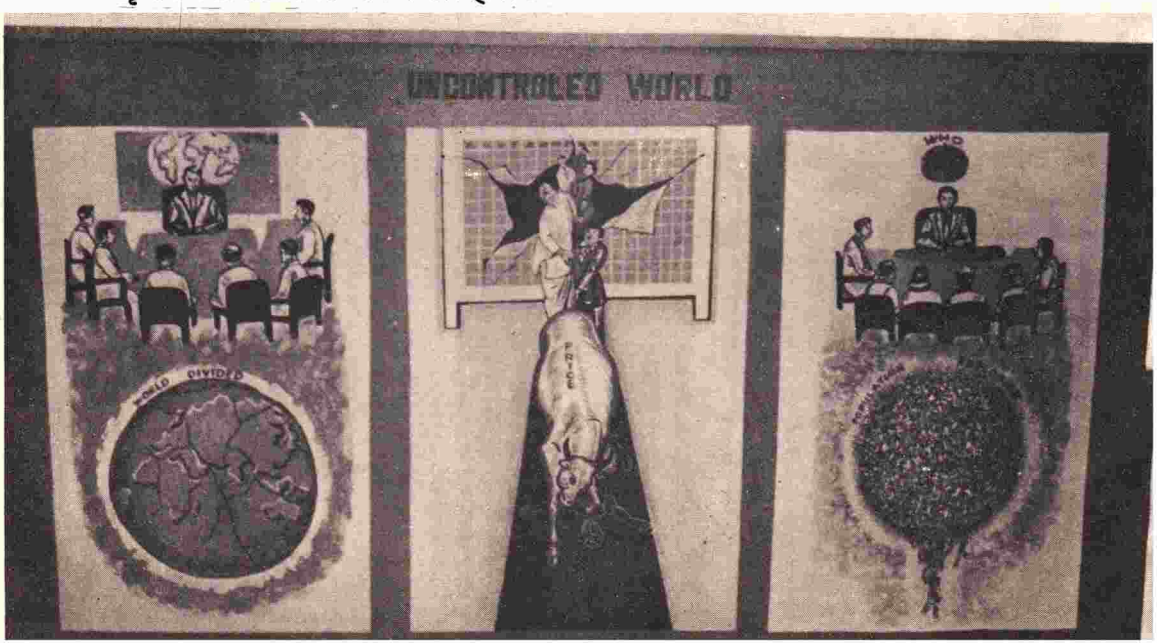

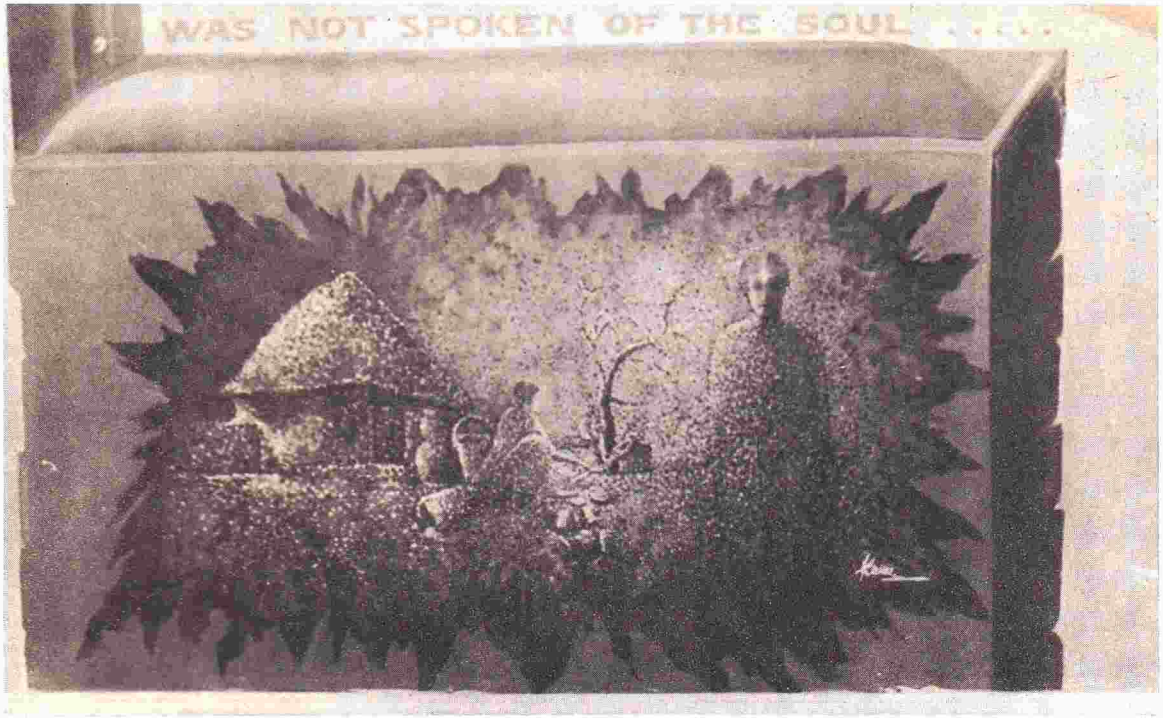

देहली मण्डप—इस संसार की हरेक वस्तु सूक्ष्म परमाणुओं की बनी है और ये परमाणु प्रतिक्षण टूट और बिखर रहे हैं। विश्व की हर वस्तु क्षणभंगुर और नश्वर है ; केवल आत्मा ही प्रकृति से भिन्न अविनाशी प्रकाशमय सत्ता है।

हर पंगूड़ा पूछता है : कहाँ से आये ? हर कबर पूछती हैं—"कहाँ जायें ?" यह जीवन दीर्घ यात्रा में एक स्टेशन की तरह है और हम मुसाफिर हैं।

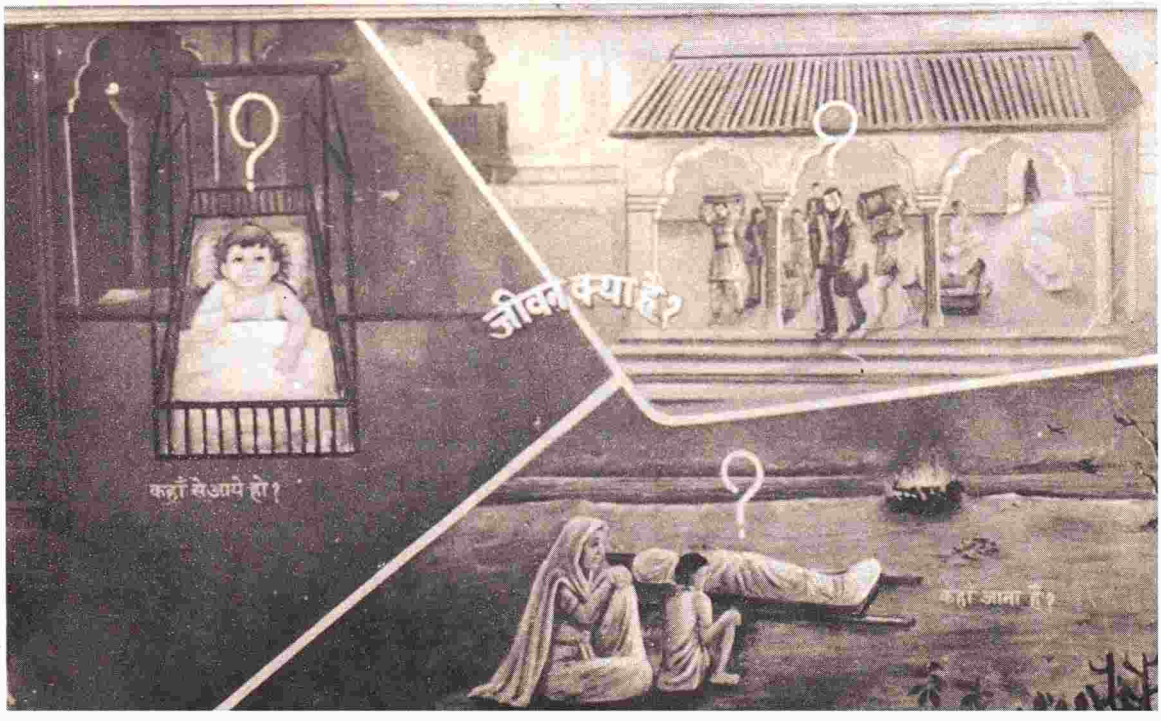

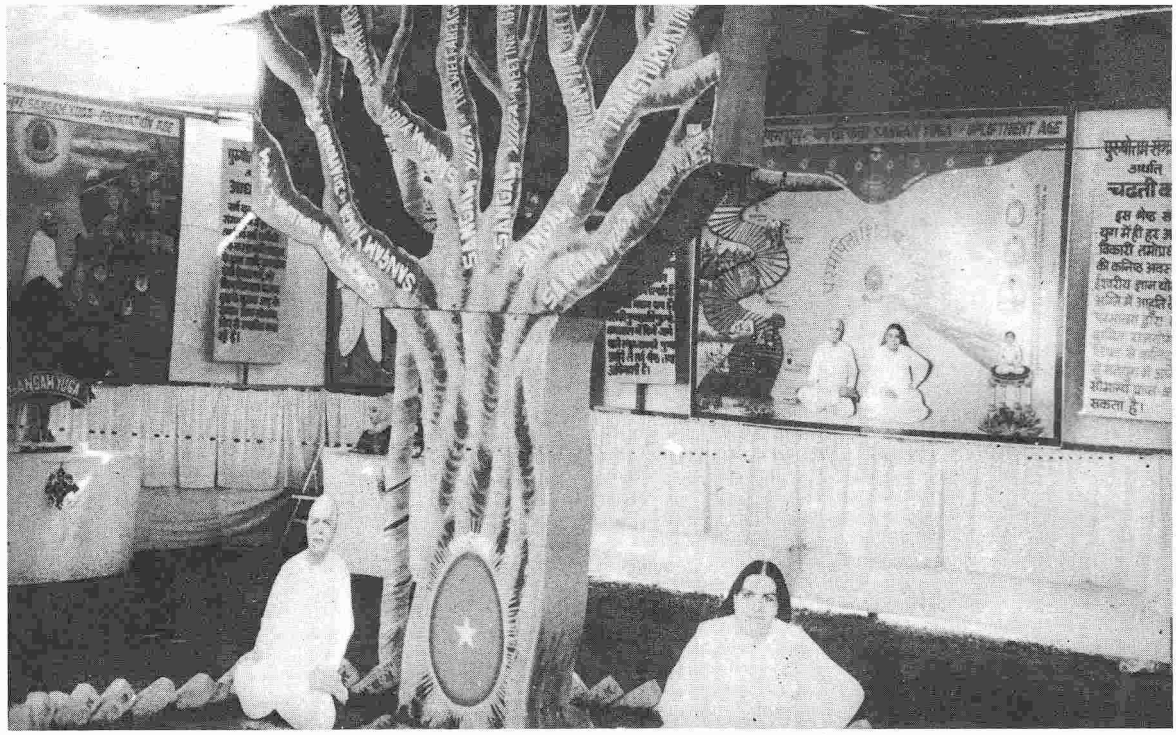

बंगाल मण्डप—इसमें संगमयुग का महत्त्व दर्शाया गया है। शिव को विश्व-वृक्ष के अविनाशी बीज के रूप में चित्रित किया गया है और प्रजापिता ब्रह्मा और जगदम्बा सरस्वती को इसके मूल में दिखाया गया है।

देहली मण्डप—जब मनुष्य अज्ञानान्धकार में होता है तब पाँच विकार मन में घात लगाये रहते हैं और अवसर पाकर आक्रमण करते हैं। जब मनुष्य ईश्वरीय ज्ञान प्रकाश प्राप्त करता है तभी वह इनसे छुटकारा पाता है।

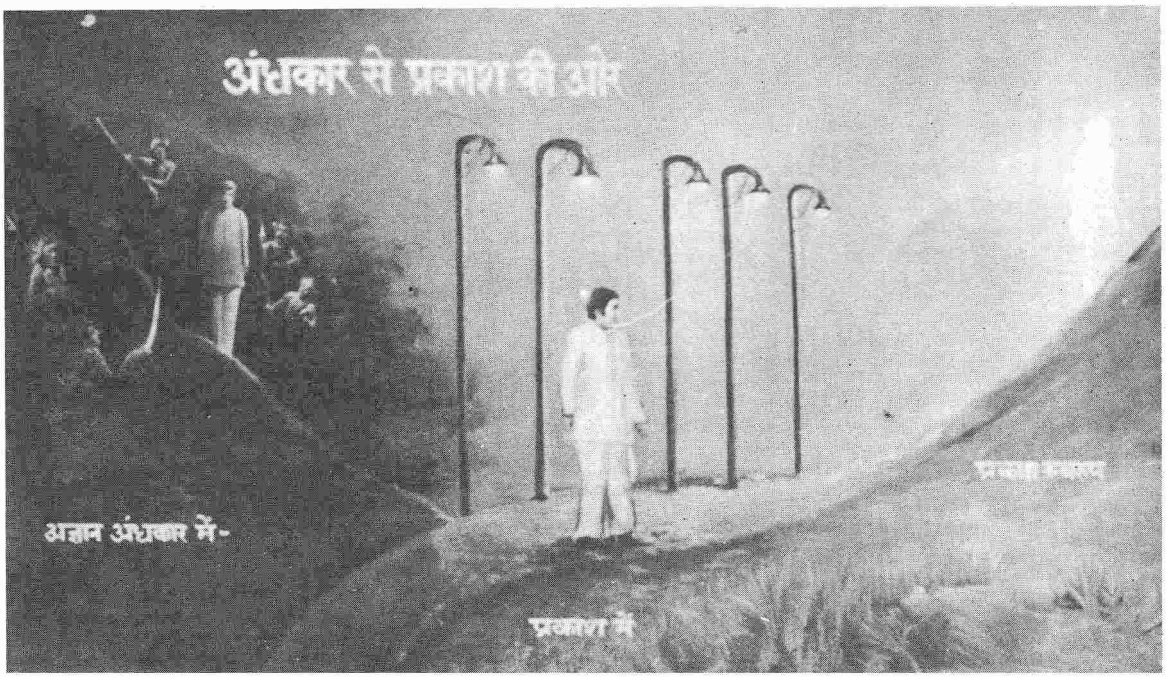

लण्डन में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के राजयोग केन्द्र ने एक अन्तर्राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया था और उन्होंने अनेक प्रकार से उसको प्रसिद्ध किया था उसके विषय थे—लोकातीत अनुभव, आदर्श संसार का दृश्य आदि। कलाकार जून बर्टेनट्ट को इसके लिए प्रथम पुरस्कार मिला। उन्होंने इसको शीर्षक दिया—'पैराडाइज' (स्वर्ग)

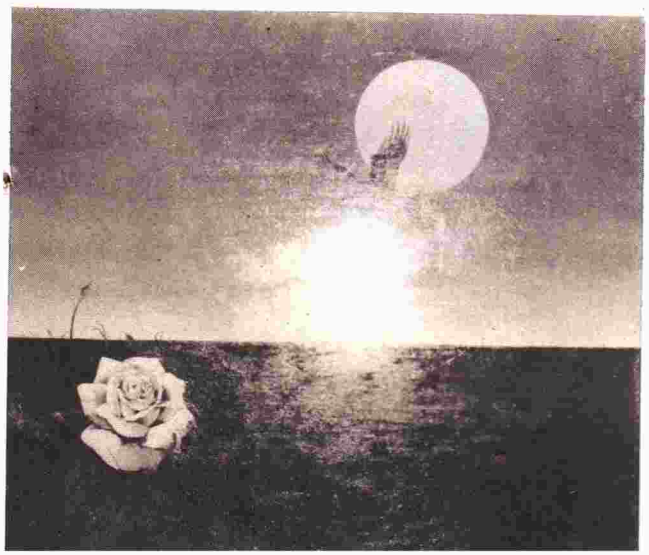

ये एक-दूसरे प्रतियाशी की कृति है

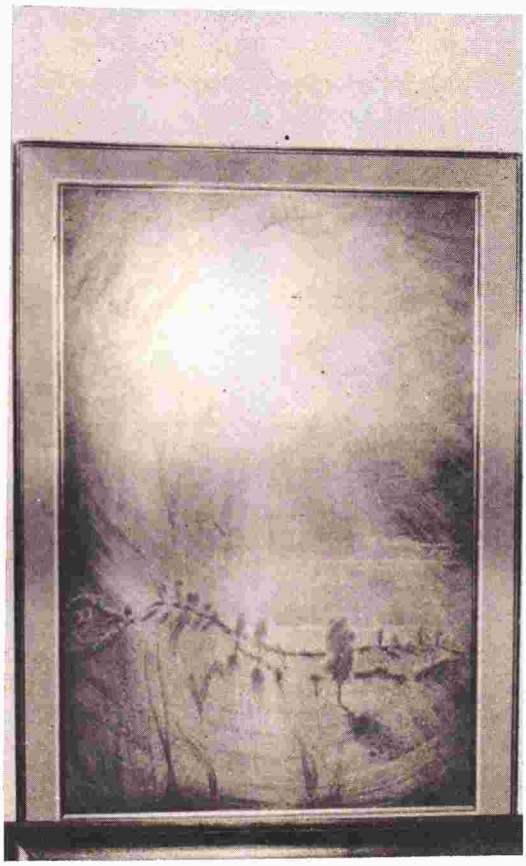

कृति का शीर्षक था 'फॉर एवर' (सदा के लिए)। यह विलियम आर्कली की कृति है।

इस प्रकार एक सौ से अधिक कृतियाँ प्रतियोगिता में सम्मिलित हुईं।

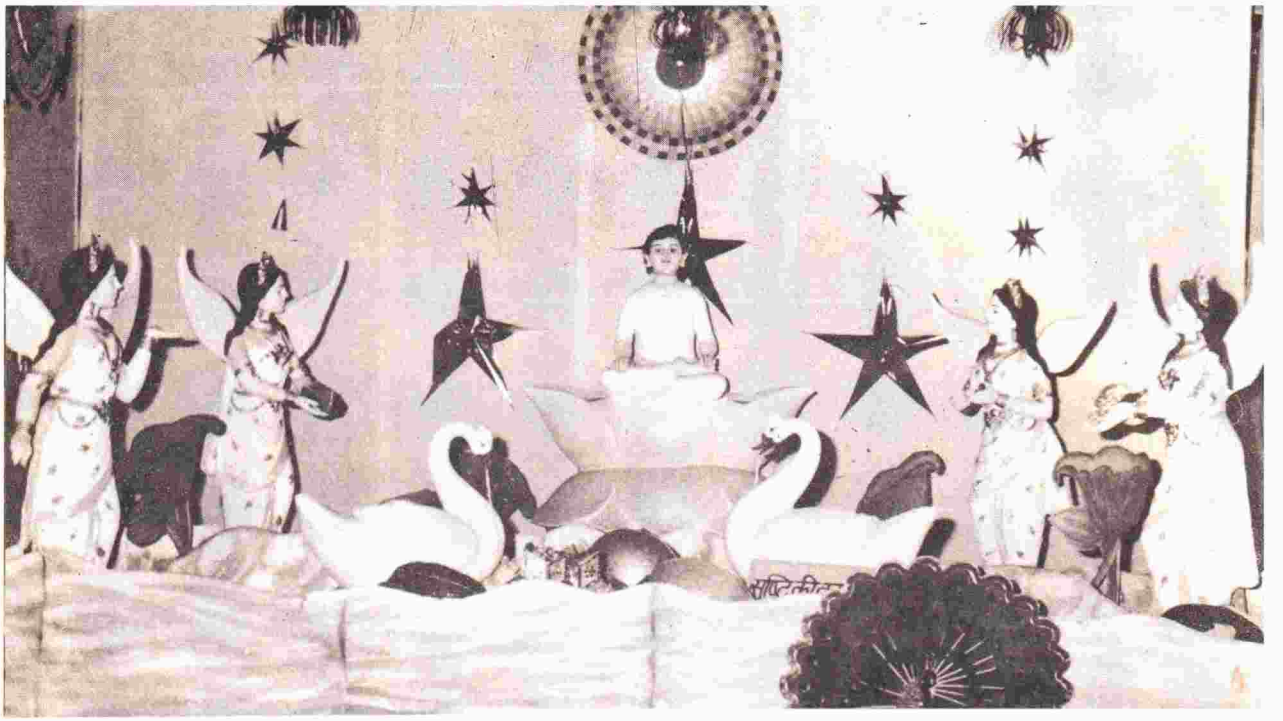

योग मण्डप में का एक मूर्ति दृश्य—जब योगी कमल पुष्प के समान न्यारा और अलिप्त हो जाता है तब "पवित्रता, शान्ति, स्वास्थ्य और आनन्द की परियाँ" उसे वरदान देती हैं। उसका मन तनाव, चिन्ता और भ्रष्ट विचारों से रहित हो जाता है।

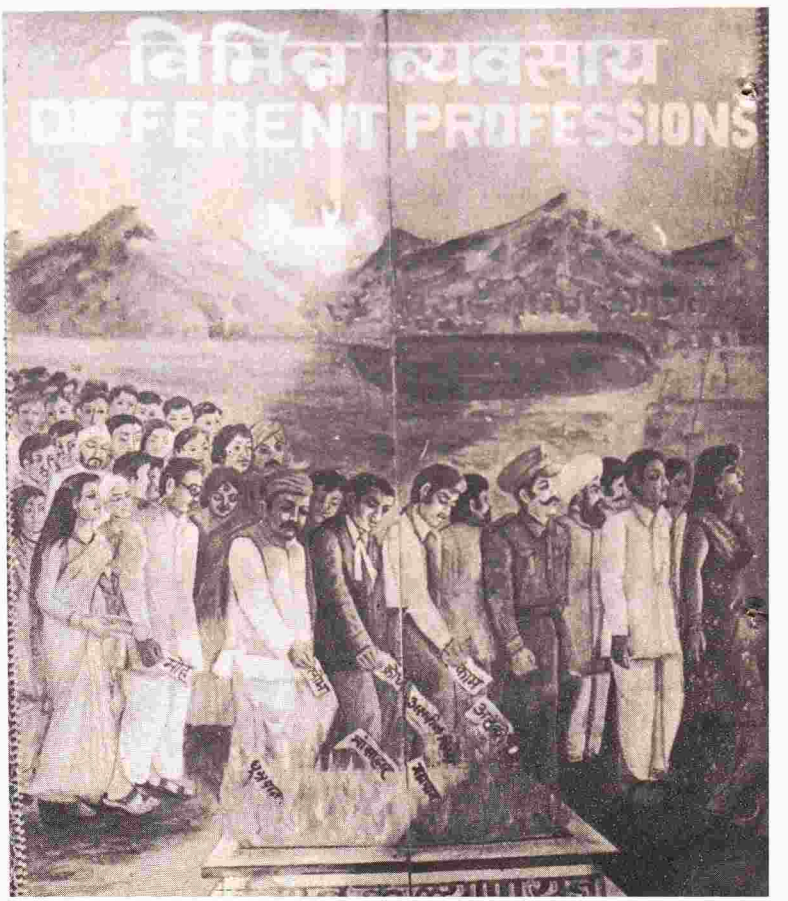

पवित्रता के बिना मनुष्य को शान्ति नहीं मिल सकती। अतः काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या आदि के रूप में जो अपवित्रता है, उसको ईश्वरीय ज्ञानाग्नि में स्वाहा करना ही सच्चा यज्ञ करना है।

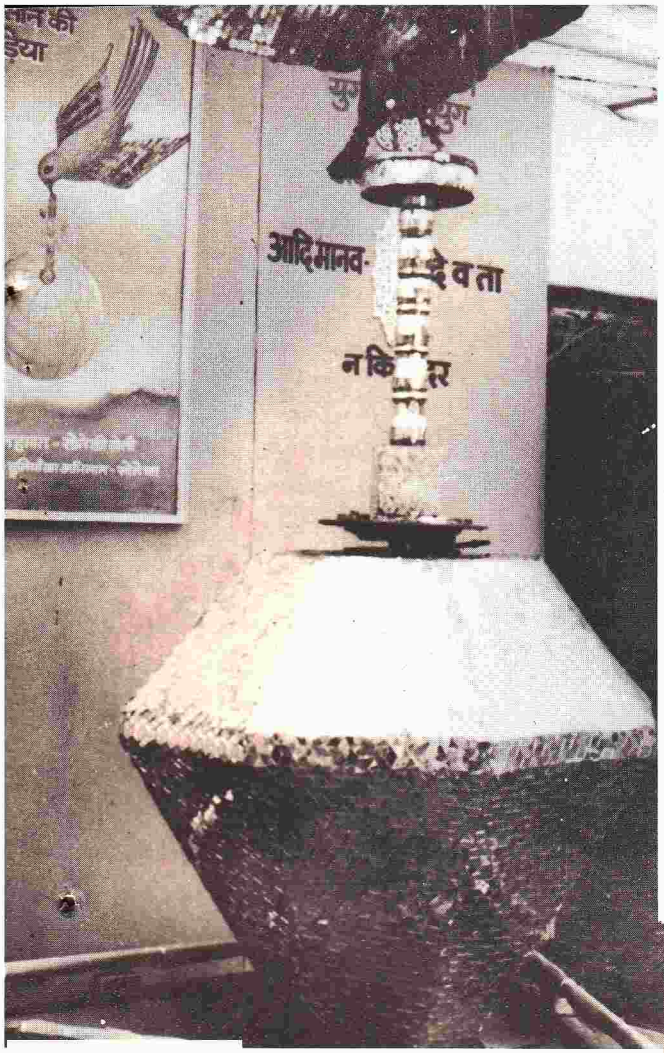

महाराष्ट्र मण्डप—विकासवाद कहता है कि अमीबा से वानर और उससे मनुष्य—यह विकास की कड़ियाँ हैं। इसके अनुसार प्रारम्भ में "सभ्यता" नाम मात्र भी न थी। परन्तु महाराष्ट्र के मण्डप में दिखाया था कि आदि युग अर्थात सतयुग में सभ्यता अपनी चरम सीमा पर थी। एक माडल (सामने का चित्र देखिये) द्वारा दिखाया गया था कि भारत तब एक हीरा था, "सोने की चिड़िया था" अथवा "विश्व का आश्चर्य" था। आज मानव उस स्थिति से पतित हो चुका है।

मध्य प्रदेश मण्डप—आज एक कृषक भूमि को केवल बो डालता है परन्तु यदि वह चाहे तो हल चलाते हुए ईश्वरीय स्मृति में रहने से बड़ा राज-ऋषि बन सकता है।

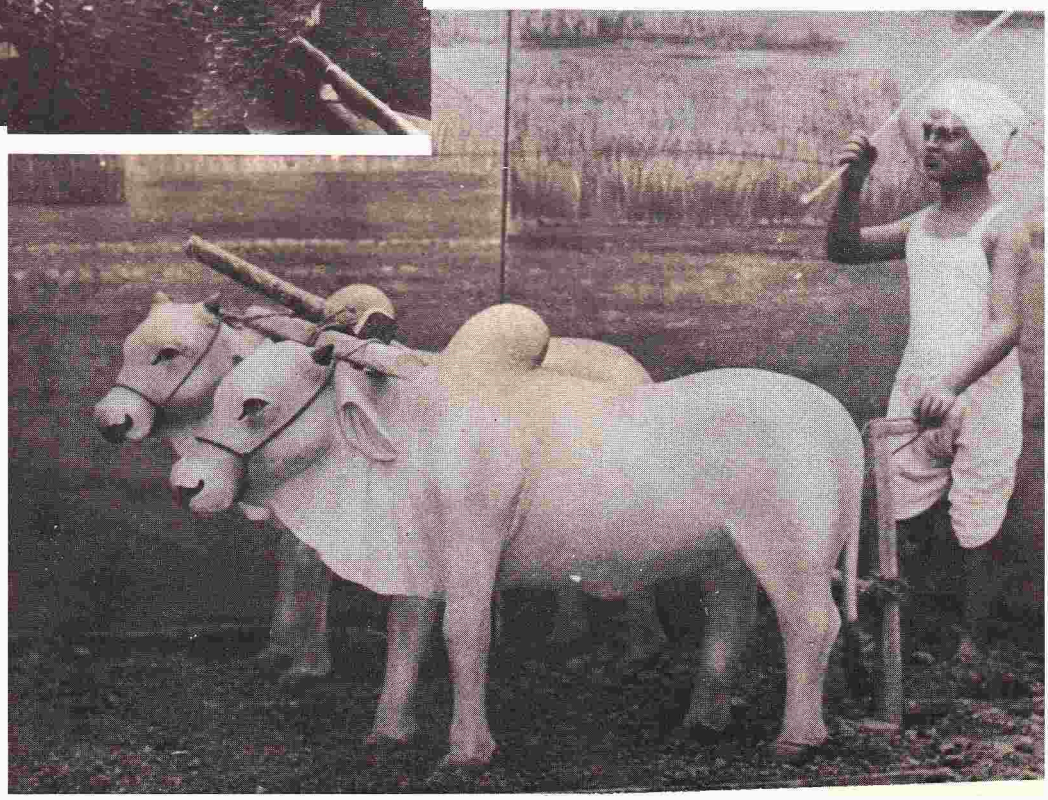

भारतमाता शक्ति मण्डप—यद्यपि ऐसा लगता है कि इसमें देवियों अथवा शक्तियों की मूर्तियाँ रखी हैं, वास्तव में ये चेतन हैं। एक गीत द्वारा इन शक्तियों का परिचय देते हुए बताया गया था कि परमात्मा शिव अवतरित हो चुके हैं और शिव-शक्तियाँ अपना कर्तव्य कर रही हैं।

आस्ट्रेलिया—के मण्डप में लोग रचयिता और रचना के ज्ञान को समझने के लिए बहुत उत्सुक दिखाई दे रहे हैं। इसमें दिखाया गया है कि कैसे एटम बमों के विस्फोट से विश्व की अक्ष रेखा बदलेगी और यहाँ का वातावरण बदलेगा। यह भी दिखाया गया है कि कैसे कलियुग का विनाश होने वाला है और पवित्रता, सुख तथा शान्ति सम्पन्न सतयुग आने वाला है।

बच्चों के लिए कई प्रकार के प्रतिस्पर्धा अथवा प्रतियोगिता कार्यक्रम किये गए थे। एक में उन्हें "अच्छे बच्चे" "अच्छा समाज", "बालकों की समस्याएं" आदि विषयों पर चित्र बनाने के लिए भी कहा गया था तथा दूसरी स्पर्धा में "नीति बचन" बनाने और लिखने के लिए कहा गया था। बच्चों की प्रसिद्ध पत्रिका "नन्दन" के सम्पादक भ्राता जयप्रकाश भारती ने बच्चों द्वारा बनाये चित्रों आदि के मण्डप का उद्घाटन किया था। यहाँ वे चित्रों आदि का अवलोकन कर रहे हैं। ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी, मोहिनी जी और उर्मिल जी भी साथ खड़ी देख रही हैं।

राजयोग शिविरों का उद्घाटन—राजयोग शिविरों का उद्घाटन गृह एवं संसदीय मामलों के राज्य मंत्री भ्राता पी० वेंकतसुब्बैया ने किया था। उद्घाटन के बाद सभा कार्यक्रम के लिये मंच पर बैठे हैं बायें से दायें बियावर के ईश्वरीय सेवा केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० राधा, आगरा उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय सेवा-केन्द्रों की इंचार्ज ब्र० कु० विमला, गुजरात से सुपरिटेंडिंग इंजिनीयर ब्र० कु० जेठवा, **ब्र० कु० चन्द्रमणि** भावनगर राजयोग केन्द्र की शिक्षिका ब्र० कु० गीता।

राजयोग शिविरों का उद्घाटन—छवि में भारत के गृह मंत्रालय के राज्य मंत्री भ्राता पी० वेंकतसुब्बया राजयोग शिविरों का उद्घाटन करते दिखाई दे रहे हैं। उनकी दायीं ओर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी और बायीं ओर कश्मीरी गेट देहली के सेवा-केन्द्र की ब्रह्माकुमारी लीला जी तथा ब्र० कु० मीरा जी दिखाई दे रही हैं।

प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम—प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम का उद्घाटन केन्द्रीय वित्त मंत्रालय के उपमंत्री भ्राता मगन भाई बरोत जी ने किया जो यहां एकदम बायीं ओर दिखाई दे रहे हैं। उनके बायीं ओर हैं—राजकोट राजयोग केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० भारती, बम्बई में गोरे गाँव राजयोग सेवा केन्द्र की शिक्षिका ब्र० कु० दिव्या, सूरत के ईश्वरीय सेवा केन्द्र की शिक्षिका ब्र० कु० लता जी तथा जुलियन बौलज़।

महोत्सव में हर रात्रि को होने वाले प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम का एक दृश्य आने वाले सतयुग में जब श्रीकृष्ण चैन की मुरली बजायेंगे तब हर कोई कितना खुश होगा।

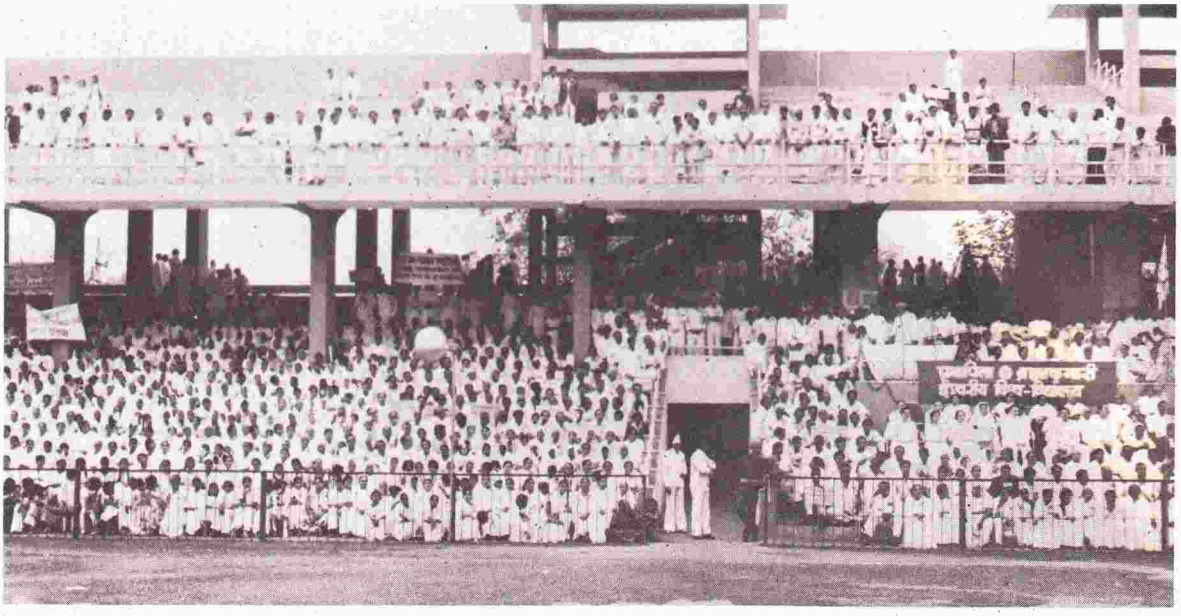

शोभा यात्रा के प्रारम्भ से पहले, सभी लोग अम्बेडकर स्टेडियम में एकत्रित हुए थे। प्रवेश मार्ग की दायीं ओर मंच दिखाई दे रहा है जहां ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० प्रकाशमणि जी, सह प्रशासिका मनमोहिनी जी तथा क्षेत्रीय संचालिकाएँ ब्र० कु० बृज इन्द्रा जी, ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी, एवं ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी, श्रीमती सैली स्विग शैली, कृषि मन्त्रालय में राज्य मन्त्री भ्राता स्वामीनाथन तथा अन्य लोग बैठे हैं। यहीं से देहली नगर निगम के मुख्य आयुक्त ने प्रतिनिधियों के लिए स्वागत पत्र पढ़ना था।

यह लाल किला मैदान पर, विश्व कल्याण महोत्सव के लिये बनाए गए विशाल सभा मण्डप के प्रवेश का एक भाग हैं। पृष्ठ भूमिका में लाल किले की दीवार दिखाई दे रही है।

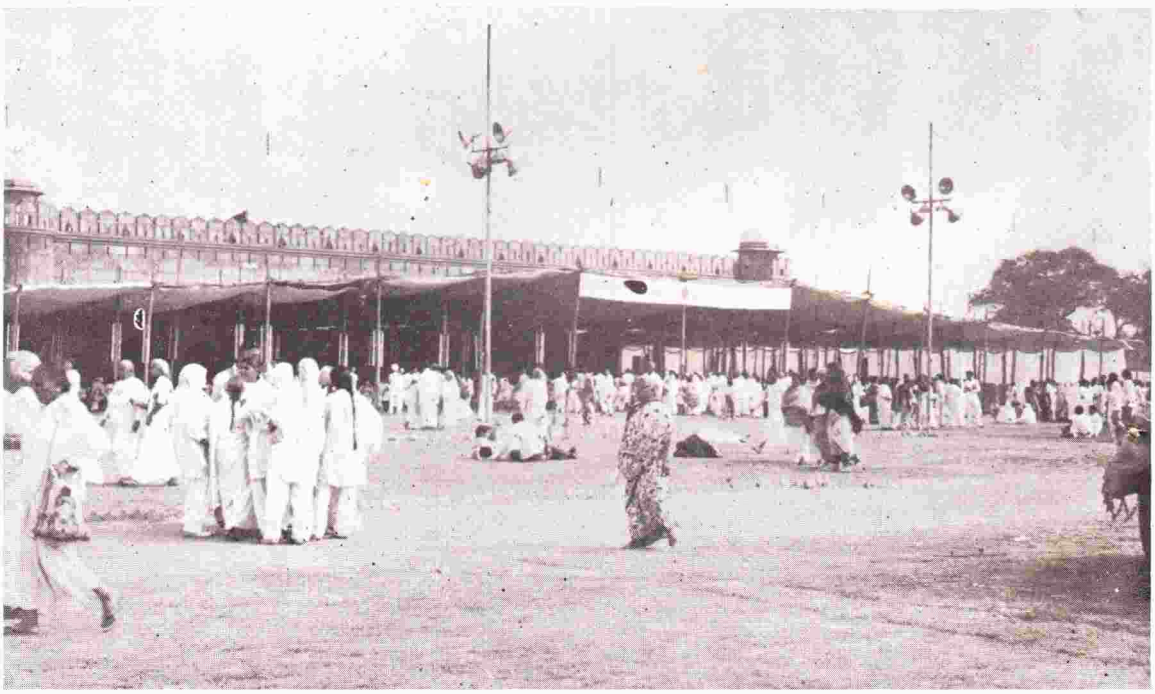

पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश—सतयुग में दूध और घी की नदियाँ बहती थीं। सभी नारी-नर देवी-देवता थे, अर्थात् मन, वचन और कर्म से पवित्र थे। तब विश्व में सम्पूर्ण शान्ति थी। शिव बाबा अब उसी दुनिया की पुर्नस्थापना कर रहे हैं।

आस्ट्रेलिया—मनुष्य माया में फंसा हुआ है। मादक पदार्थों तथा भौतिकवादिता से वह गर्वित है। मनोविकारों के कारण उसका पतन हुआ है। अब शिव बाबा उसे इनसे मुक्त होने का मार्ग दर्शा रहे हैं।

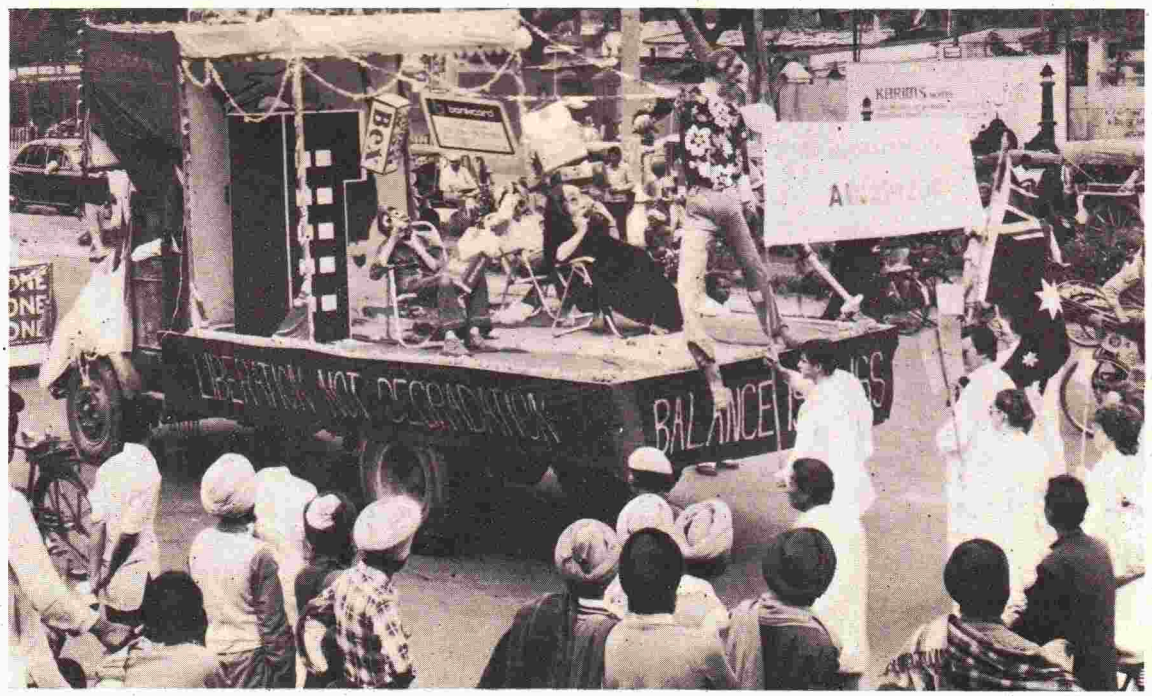

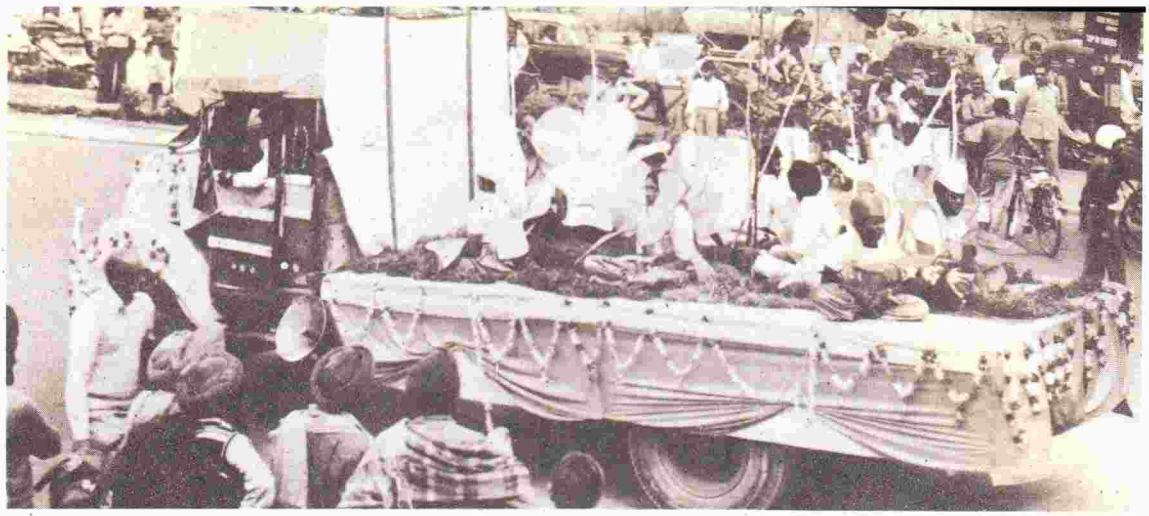

ट्रिनिदाद—वहाँ के ब्रह्माकुमारी सेवा-केन्द्र द्वारा बनाई झाँकी में दिखाया गया है कि सहनशीलता, नम्रता, मधुरता आदि गुण धारण करने से नर-नारी फूल-सम बन जाते हैं और यह सृष्टि सतयुगी फूलों का बगीचा बन जाती है।

दुबई—द्वारा पेश की गयी झाँकी में दिखाया गया है कि परमपिता शिव द्वारा दिखाये गये मार्ग में सभी श्रेष्ठताएँ सम्मिलित हैं और उस द्वारा मनुष्य को प्रभु-मिलन प्राप्त होता है और धर्मों में भी एकता स्थापित होती है।

मैसूर तथा हुबली—अब रावण माया और उसकी सेना द्वारा चल रहा कलियुगी राज्य का अन्त होगा और परमपिता शिव द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग से सतयुग अथवा स्वर्ग के द्वार खुलेंगे।

उत्तर प्रदेश कानपुर—योगी और भोगी में ऐसा ही अन्तर है जैसा कि हंस और बगुले में।

देहली—समस्याओं के पहाड़ को हम पवित्रता के सहयोग की एक-एक अंगुली देकर उठा सकते हैं। पवित्रता के लिए शान्ति के स्तम्भ परमात्मा द्वारा बताई शिक्षाएँ धारण करनी हैं और योग-युक्त होना है।

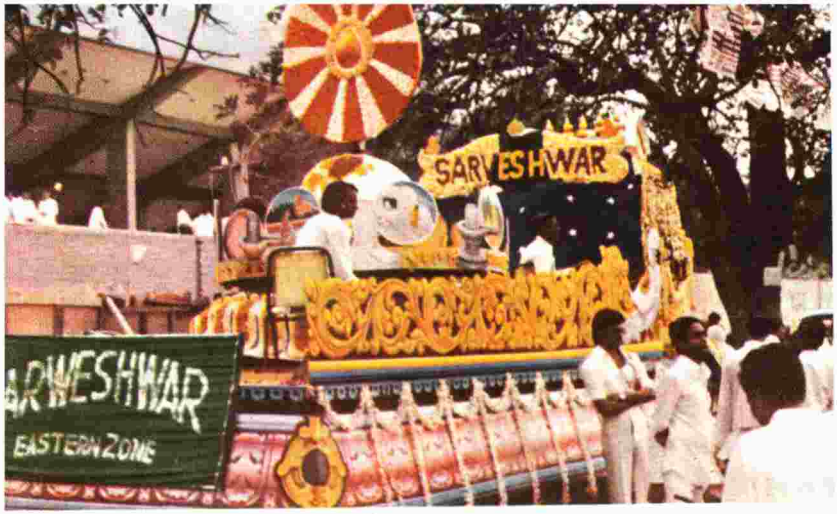

बंगाल-बिहार-आसाम-उड़ीसा-मद्रास – सबसे ऊपर ज्योति बिन्दु परमपिता शिव का प्रतिरूप देकर स्पष्ट किया गया है कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता हैं।

न्यूयार्क अमेरिका—सभी देशों अथवा राष्ट्रों में एकता तभी होगी जब हम सभी स्वयं को एक ही परमपिता परमात्मा की सन्तान-परस्पर भाई-भाई निश्चित करेंगे।

इंग्लैंड—आज की राजनीति और आज के धर्म वैमनस्य पैदा कर रहे हैं। परमात्मा से मन जोड़ने से ही विश्व स्वर्ग और संयुक्त राज्य बनेगा।

एक शिव बाबा की प्रत्यक्षता का लक्ष्य लिए शान्ति यात्रा की एक टुकड़ी का दृश्य।

महाराष्ट्र की भव्य झांकी विषय : भारत सोने की चिड़िया था।

सान-फ्राँसिको अमेरिका— महाभारत प्रसिद्ध यादवों द्वारा बनाये गये मूसल और उनसे विश्व महाविनाश

पटौदी हाउस के निकट से गुजरता हुआ जलूस।

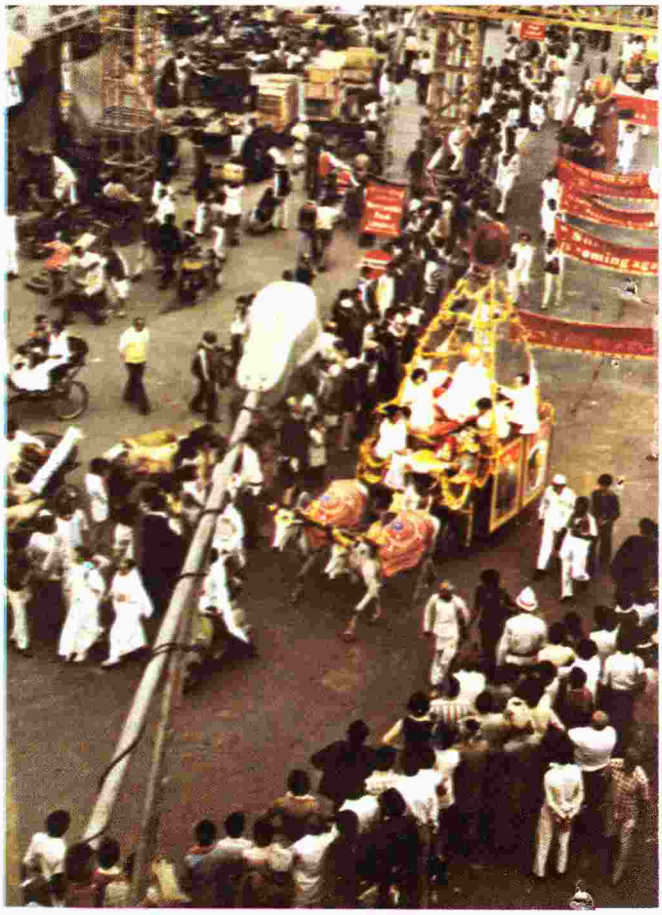

जर्मनी वालों की भव्य झाँकी : झाँकी में प्रदर्शित किया गया है कि परमपिता शिव ने गीता-ज्ञान प्रजापिता ब्रह्मा के तन द्वारा दिया और दे रहे हैं।

तिरुपति देवस्थानम—दिखाया गया है कि श्री वेंकटेश्वर अथवा श्री कृष्ण स्वयं ही श्री नारायण हैं।

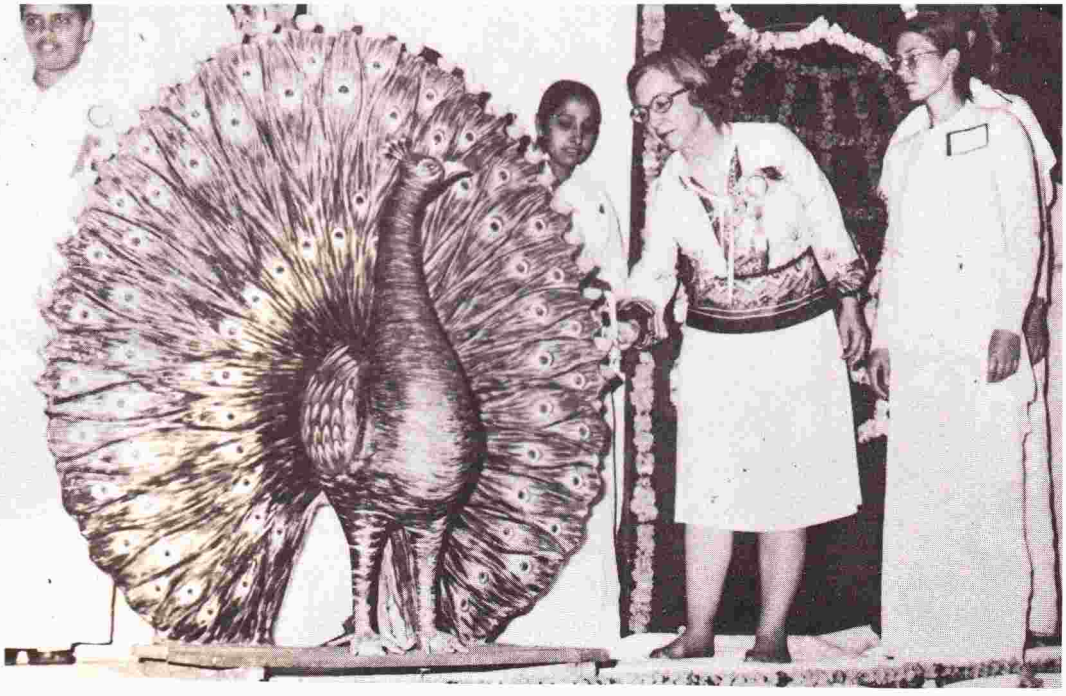

उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लेती हुई—संयुक्त राष्ट्र संघ की ग़ैर सरकारी संस्था-संगठन की प्रधान श्रीमती सैली स्विग शैली, गयाना के राजयोग सेवा-केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० मीरा, सिंगापुर से पधारीं ब्र० कु० शारदा, सानफ्रांसिको से आई हुई ब्र० कु० डेनीज़।

लोक सभा के अध्यक्ष भ्राता बलराम झाखर, मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी तथा संयुक्त प्रशासिका मनमोहिनी जी, ब्र० कु०हृदयमोहिनी मनोहर इन्द्रा, आत्म इन्द्रा आदि मोर पर बने दीपकों को प्रकाशमान करके महोत्सव का प्रारम्भ कर रहे हैं।

विश्व कल्याण सम्मेलन का उद्घाटन—मंच पर बैठे हैं (बायें से दायें), संयुक्त राष्ट्र संघ की ग़ैर सरकारी संस्था संगठन की प्रधान श्रीमति सेली स्विंग शैली, ज्ञानामृत तथा वर्ल्ड रिन्युवल पत्रिकाओं के मुख्य सम्पादक ब्र० कु० जगदीश चन्द्र, देहली क्षेत्र के सेवा केन्द्रों की इंचार्ज ब्र० कु० हृदय मोहिनी, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका तथा सहप्रशासिका ब्र० कु० प्रकाशमणी तथा ब्र० कु० मनमोहिनी जी, लोक सभा के अध्यक्ष भ्राता बलराम झाकर, गयाना के उपप्रधान की पत्नी श्रीमती बेटी नारायण, उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश भ्राता कृष्णा अय्यर, आबू के अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग केन्द्र के निर्देशक ब्र० कु० निर्वैर जी।

महिला-कार्यक्रम :—बहन कुमुद जोशी (केन्द्रीय राज्य संचार मन्त्री) महिलाओं के कार्यक्रम में भाषण दे रही हैं। ब्र० कु० माहिनी, दादी प्रकाश मणि तथा जेठवा भाई मंच पर बैठे हैं।

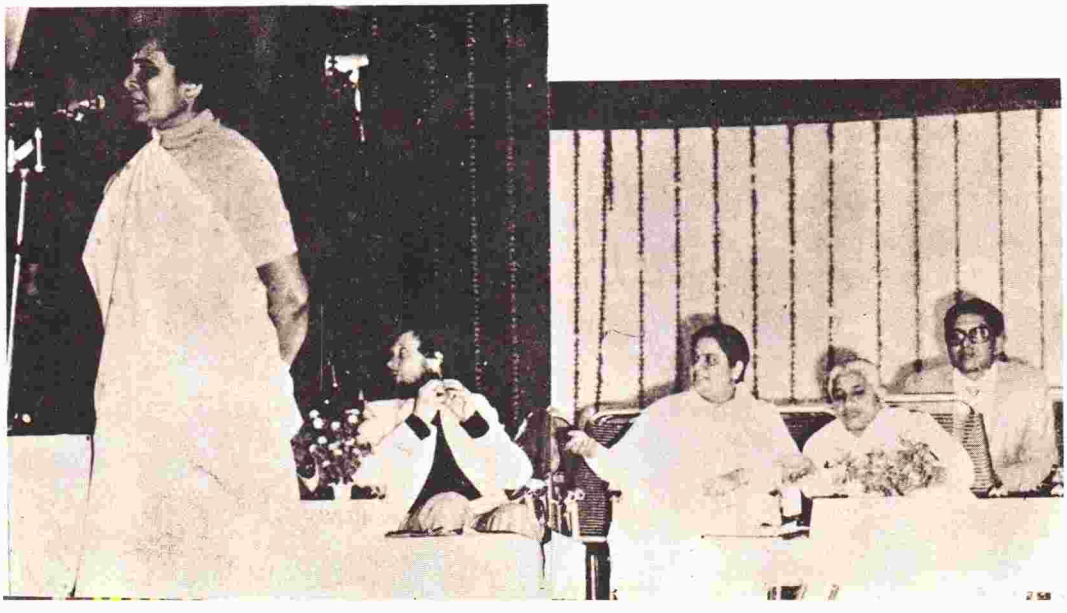

दीन दरगाह मरकज़ के प्रधान भ्राता पीर जामिन निज़ामी, आस्ट्रेलिया के राजयोगी भ्राता चार्ल्स हाग, चर्च ऑफ नार्थ इण्डिया के बिशप एवं गाडरेटर भ्राता ई० एस० नासिर, उत्तर प्रदेश, कानपुर के राजयोग सेवा केन्द्रों की क्षेत्रीय इंचार्ज ब्र० कु० आत्म इन्द्रा, हरिद्वार के मुनि हरमिलापी, भारत के पेट्रोलियम एवं केमिकल्ज़ मन्त्रालय के मन्त्री भ्राता पी० सी० सेठी, वर्ल्ड यूनियन के प्रधान एवं पाण्डीचेरी के भूतपूर्व उप-राज्यपाल भ्राता छेदीलाल, वर्ल्ड बहाई स्पिरिच्युल ऐसेम्बली के मन्त्री भ्राता आर० एन० शाह, भारत की महाबोधी सोसायटी के प्रधान आर्य वंश नायका माथेर। भ्राता पी० सी० सेठी के पीछे कुछ अन्य धार्मिक प्रतिनिधि भी दिखाई दे रहे हैं।

पत्रकार सम्मेलन :—(दाएं सेवाएं) तीसरे स्थान पर लाला जगतनारायण (जालन्धर के प्रसिद्ध पत्रकार) भ्राता मलकानी, आरगनाइज़र के सम्पादक, आस्ट्रेलिया से वहन असटैला, हिन्दी हिन्दुस्तान के सम्पादक भ्राता मिश्रा जी, भ्राता सुन्दरलाल जी धवन, भ्राता शिव नारायण गौड़ (सम्पादक नई विद्या) भ्राता प्रकाश नारायण (नई विद्या के प्रकाशक तथा मुद्रक) मंच पर बैठे हैं।

श्रीमती सैली स्विग शैली विश्व कल्याण प्रदर्शनी में अन्तर्राष्ट्रीय पण्डाल का उद्घाटन कर रहीं हैं। उनकी बायें भुजा के पीछे न्यूयार्क राजयोग सेवा-केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० मोहिनी खड़ीं हैं।

विकलाँग कल्याणोत्सव—एक अन्ध विद्यालय के छात्र एक आध्यात्मिक गीत पेश कर रहे हैं। मंच पर बैठे हैं बायें से दायें राष्ट्र संघ के अन्तर्गत गैर सरकारी संस्थाओं के संगठन की प्रधान श्रीमती सैली विग शैली, कर्नाटक बेंगलौर के ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की संचालिका ब्र० कु० हृदय पुष्पा, केन्द्रीय समाज कल्याण की अध्यक्ष सुशीला रोहतगी तथा चण्डीगढ़ के ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की इंचार्ज ब्र० कु० अचल।

गुजरात के सेवा-केन्द्रों के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत गर्वा नृत्य का दृश्य

स्विट्ज़रलैण्ड से ब्र० कु० रुथ तथा जर्मनी से बहन अलमट बाँसुरी बजाते हुए।

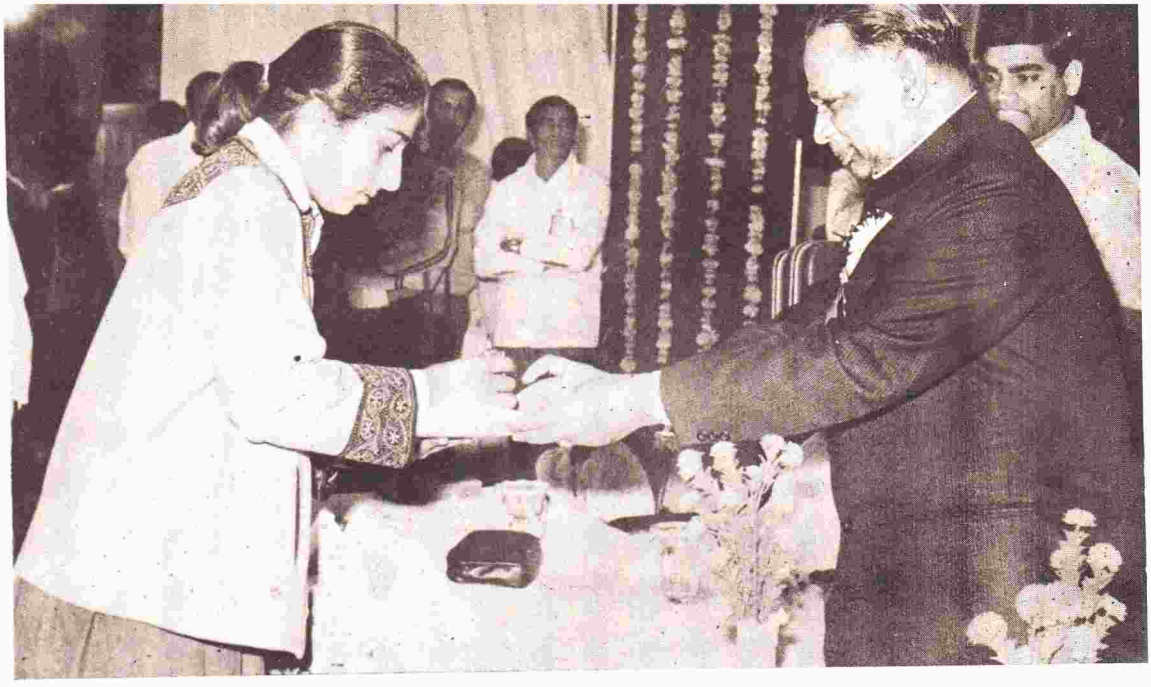

भारत के शिक्षा, समाज कल्याण एवं संस्कृति मन्त्रालय के मन्त्री श्राता एस० बी० चव्हान प्रतिस्पर्धा जीतने वाले एक विद्यार्थी, कुमारी को पुरस्कार देते हुए।

भारत में यूनेस्को के डायरेक्टर और प्रतिनिधि डॉ० वी० जी० पोडोनिस्टीन जीतने वाले छात्रों को इनाम दे रहे हैं।

भाषण प्रतिस्पर्धा—पालम कालोनी में एक हायर सेकंडरी स्कूल में भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने वाला एक विद्यार्थी माइक्रोफोन पर भाषण कर रहा है। लगभग 100 विद्यार्थी और 25 अध्यापकगण सभा में उपस्थित हैं। इस प्रकार के कार्यक्रम देहली के बहुत-से इलाकों में किए गये।

महिला सम्मेलन—बायें से दायें : भाषण करती हुई, गयाना के उप-प्रधान की धर्म पत्नी श्रीमती बैटी नारायण, संयुक्त राष्ट्र संघ के गैर-सरकारी संस्थानों की प्रधान श्रीमती सैली स्विग शैली, ब्र०कु० डा० निर्मला, इंचार्ज राजयोग केन्द्र आस्ट्रेलिया, आल इण्डिया फेंडरेशन आफ़ हाउसवाईवज़ संस्था की प्रधान श्रीमती सावित्री निगम, शक्ति नगर, देहली में राजयोग सेवा-केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० चक्रधारी तथा मध्य प्रदेश में ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की संचालिका ब्र० कु० आरती।

गयाना देश के उप-प्रधान भ्राता स्टीव नारायण, दुबई के ब्रह्माकुमारों द्वारा बनाये गए तीन लोग के माडल का उद्घाटन कर रहे हैं। उनके बायीं ओर स्काटलेंड की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी स्वदेश तथा दुबई के ब्रह्माकुमार सुरेश।

आध्यात्मिक जागृति सम्मेलन—बायें से दायें : पाण्डीचेरी के भूतपूर्व उपराज्यपाल भ्राता छेदीलाल, न्यूयार्क के राजयोग केन्द्र की मुख्य शिक्षिका ब्रह्माकुमारी मोहिनी, वर्ल्ड स्पिरिच्युल ट्रस्ट के प्रबन्धकारी ट्रस्टी ब्र० कु० रमेश भाई, बोर्ड आफ आरबीट्रेशन के अध्यक्ष न्यायाधीश जसवन्त सिंह, पंजाब और हरियाणा में ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणी, गयाना देश के उप-प्रधान भ्राता स्टीव नारायण, योग हेल्थ सेन्टर, लण्डन, के ट्रस्टी भ्राता डॉन, अहमदाबाद में राजयोग सेवा केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० चन्द्रिका ।

चिकित्सक स्नेह मिलन—बायें से दायें : आस्ट्रेलिया से राजयोगिनि ब्र० कु० मौरीन, बम्बई से डॉ० गिरीश पटेल, इंग्लैंड के ब्रिस्टल विश्व-विद्यालय से डॉ० वीडा स्कल्टंस, भारत सरकार के स्वास्थ्य सेवा विभाग के महानिर्देशक डॉ० आई० जी० बजाज, सानफ्रांसिस्को अमेरिका की इंचार्ज ब्र० कु० डेनीज, केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री भ्राता निहार रंजन लश्कर इस समय कुर्सी से उठकर माईक पर गये हैं जो कि फोटो में नहीं हैं, सानफ्रांसिस्को के मनोचिकित्सक डॉ० हेरल्ड स्ट्रीटफेल्ड ।

न्यायविद एवं विधिवेत्ता स्नेह-मिलन—बायें से दायें : भ्राता लाल चन्द वत्स वकील, गयाना देश में राजयोग शिक्षा केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० मीरा, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता मुर्तिजा फाज़ल अली तथा भूतपूर्व न्यायाधीश भ्राता पी० के० गोस्वामी, गयाना के उप-प्रधान भ्राता स्टीव नारायण, पूर्वी क्षेत्र के ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की संचालिका ब्र० कु० निर्मल शान्ता, उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश भ्राता एच० आर० खन्ना तथा देहली उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश भ्राता टी० वी० आर० ताताचारी ।

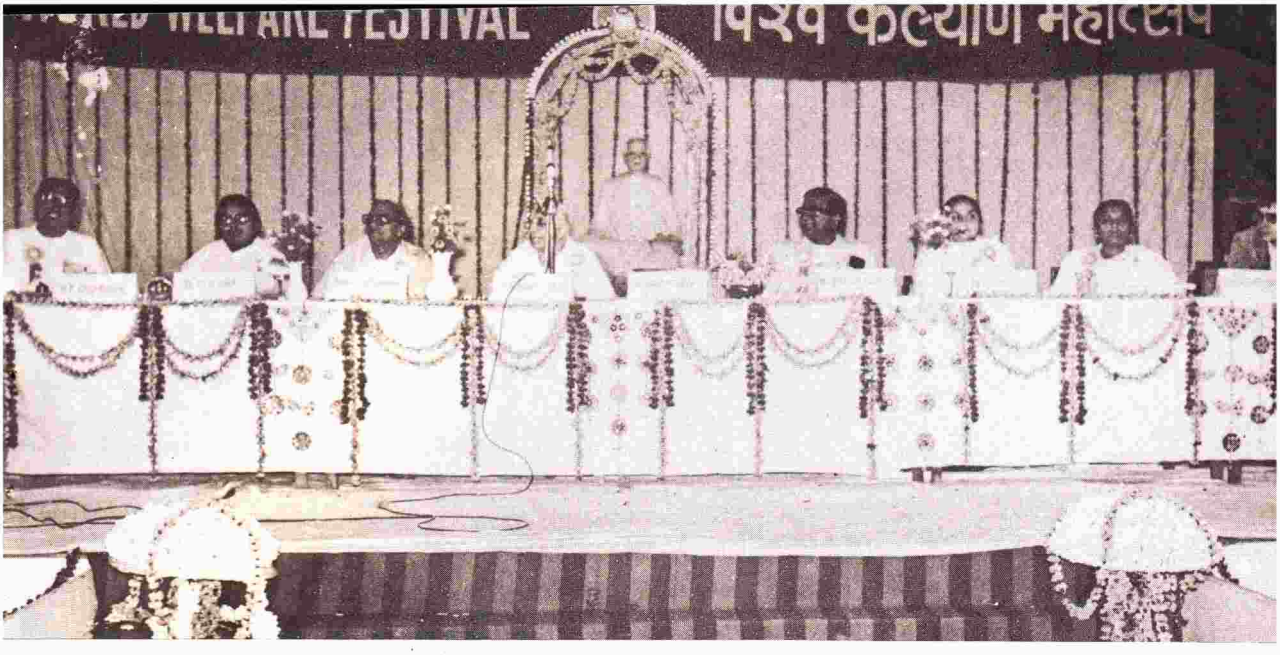

विश्व शन्ति तथा सद्भाव सम्मेलन—बायें से दायें—पत्राचार विभाग के निर्देशक ब्र० कु० ब्रजमोहन, नई देहली ईश्वरीय सेवा-केन्द्र में राजयोग की शिक्षिका ब्र० कु० आशा, ब्र० कु० सन्तराम वकील, कानपुर, पूर्वी क्षेत्र के ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की क्षेत्रीय संचालिका ब्र० कु० निर्मल शान्ता, गयाना के उपप्रधान भ्राता स्टीव नारायण, मुजफ़्फरपुर सेवा-केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० रानी जी, बम्बई से राजयोग शिक्षिका ब्र० कु० उषा जी, जर्मनी से राजयोगी ब्र० कु० स्टीफ़न नागेल।

शिवरात्री महोत्व—(बायें से दायें) राजोरी गार्डन राजयोग केन्द्र की इंचार्ज रुकमणी, पाण्डव भवन, नई देहली की राजयोग शिक्षिका ब्र० कु० आशा, भारत के रेलमन्त्री भ्राता केदार पाण्डेय रेल मन्त्रालय के राज्य मन्त्री जाफ़िर शरीफ़, पटेल नगर राजयोग केन्द्र की इंचार्ज ब्र० कु० शुक्ला।

भरुच गुजरात सेवा केन्द्र के विद्यार्थियों द्वारा गोप गंथम रास।

गुजरातः— जूनागढ़ के विद्यार्थियों द्वारा पेश किया गया मनमोहक (दीपक नृत्य)। यह आत्मा को ज्ञान-प्रकाश प्राप्त होने तथा आनन्दित होने का बोधक है।

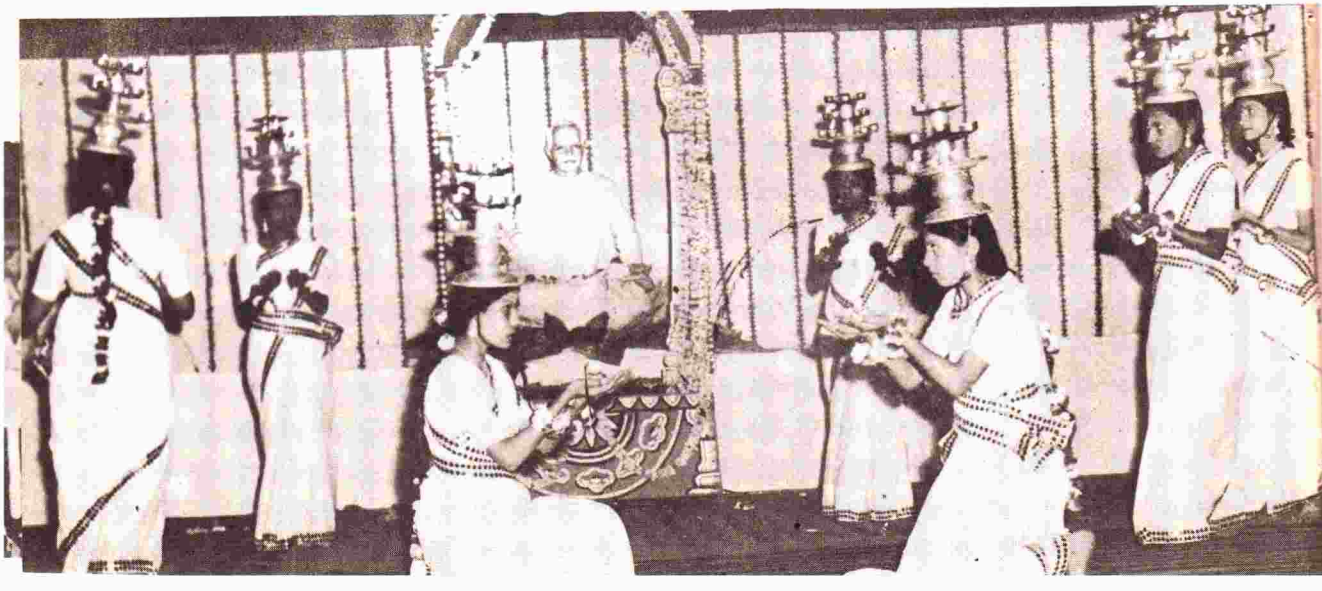

विश्व-बन्धुत्व समारोह—बायें से दायें : सानफ्रांसिस्को के राजयोग केन्द्र की इंचार्ज डेनीज़, संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्तर्गत गैर सरकारी संस्थाओं के संगठन की प्रधान श्रीमती सैली स्विंग शैली, ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा विदेश-सेवा की संचालिका ब्र० कु० जानकी, राजयोगिनि ब्र० कु० जयन्ती, ब्र० कु० मौरीन गुडमैन, ब्र० कु० और अन्य विदेशी प्रतिनिधि।

विश्व-कल्याण राजयोग महोत्सव—बायें से दायें : आबू पर्वत पर अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग केन्द्र के निर्देशक राजयोगी ब्र० कु० निर्वैर, दैनिक हिन्द समाचार के मालिक तथा पंजाब के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री ला० जगत नारायण, न्यूयार्क के राजयोग शिक्षक ब्र० कु० एडन वाल्कर, भारत के परिवहन मंत्री भ्राता वीरेन्द्र पाटिल, आपूर्ति मंत्रालय के उपमंत्री भ्राता बृजमोहन मोहन्ती, ब्रह्माकुमारी शिक्षण प्रशिक्षण केन्द्र, आबू की इंचार्ज ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की सह-प्रशासिका तथा मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी तथा दादी प्रकाशमणि जी, स्काटलेण्ड में राजयोग सेवा-केन्द्र की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी सुदेश, बम्बई घाटकोपर स्थित ईश्वरीय सेवा-केन्द्र की इंचार्ज ब्रह्माकुमारी नलिनी।

शिक्षाविद सम्मेलन—बायें से दायें : तमिलनाडु में ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों की इंचार्ज ब्र० कु० शिव कन्या, भारत के शिक्षा, समाज कल्याण तथा संस्कृति मन्त्रालय के मन्त्री भ्राता एस० बी० चव्हाण, भारत में यूनेस्को के निर्देशक तथा स्थानीय प्रतिनिधि भ्राता डा० वी० जी० पोडोइनिटाजिन, आस्ट्रेलिया से बहन एस्टेला मायर्ज, लण्डन से शिक्षाविद ब्र० कु० जिम रेयान, न्यूयार्क में राजयोग शिक्षाधिकारी ब्र० कु० गायत्री।

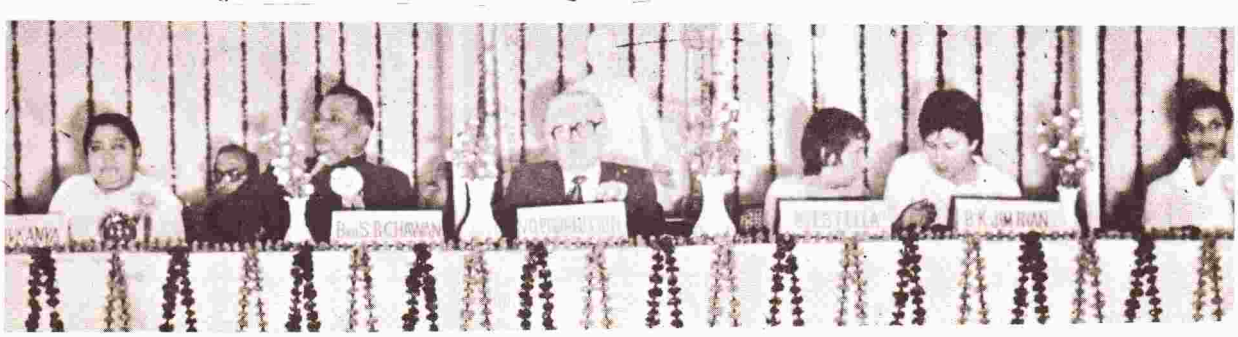

गुजरात मण्डप—इसमें सहज राजयोग के सिद्धान्त और अभ्यास विधि चित्रित किये गये थे।

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, 151 ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D N) 178

आध्यात्मिक सेवा-समाचार (चित्रों में)

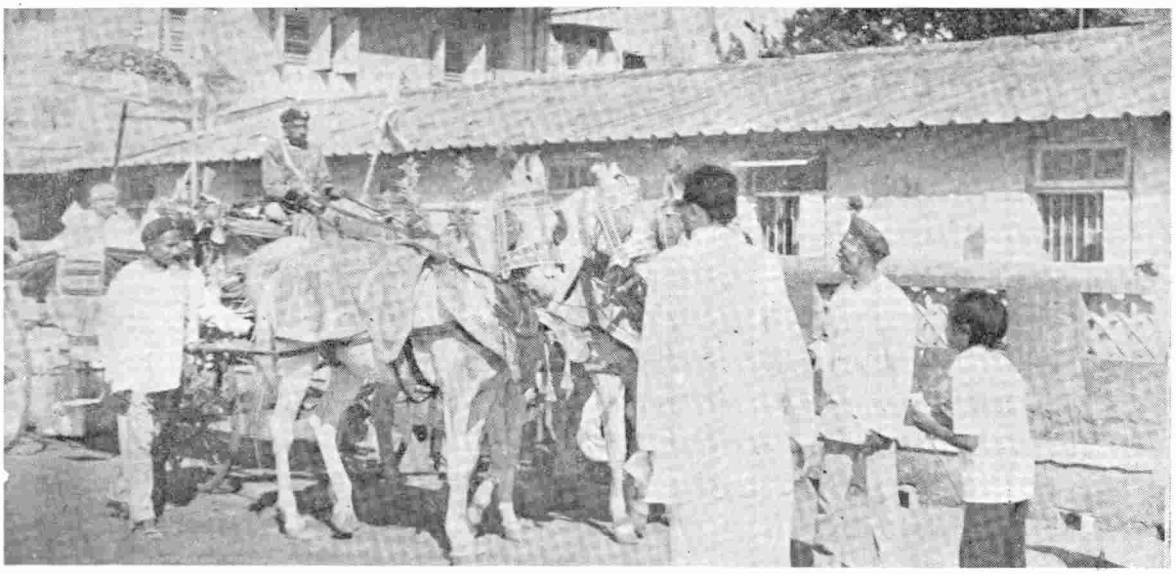

↑
बम्बई (मुलुन्द) में अयोजित विश्व-कल्याण आध्यात्मिक मेले के अवसर पर निकाu शोभा यात्रा का दृष्य ।

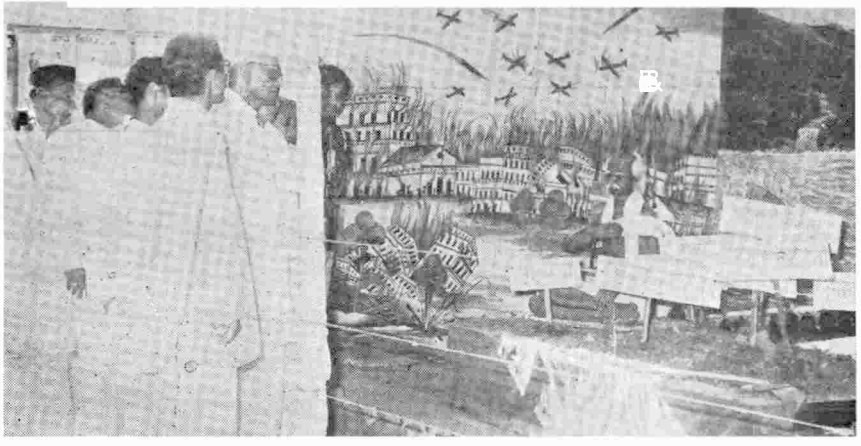

←मुलुन्द (बम्बई) में आयोजित विश्व-कल्याण आध्यात्मिक मेले का अवलोकन करा हुए भ्राता मोरार जी भाई देसाई ।

→
मुलुन्द में विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले के अन्तर्गत हुए मातृ शक्ति सम्मेलन में मंच पर उपस्थित बायें से ब्र० कु० रमेश जी, भ्राता के० पी० शाह, अतिथि विशेष मोरार जी देसाई, ब्र० कु० बृज इन्द्रा जी, ब्र० कु० पुष्प शान्ता जी, उषा बहन, गोदावरी जी । ब्र० कु० योगिनी जी प्रवचन कर रहीं हैं ।

Y त के कोने कोने में आध्यात्मिक मेले

uधियाना में मानव कल्याण आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन दादी चन्द्रमणि जी शिव का ध्वज फहरा कर रही हैं। →

← बटाला में विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करने के पश्चात् ब्र० कु० चन्द्रमणि जी तथा अन्य भाई बहन शिव बाबा की याद में खड़े हैं।

u ना मेले के समाप्ति समारोह के कार्यक्रम में→
G त जनता ध्यान मग्न होकर प्रवचन सुनते हुए।

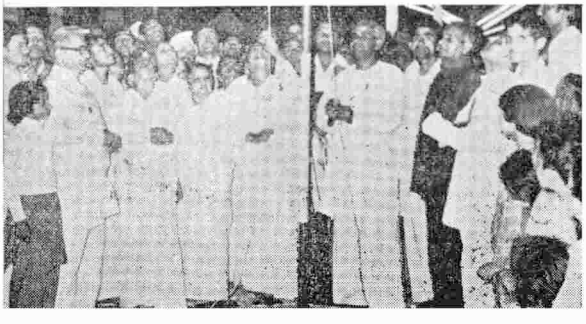

←शिमला में आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी ध्वजारोहण करके कर रही है।

जबलपुर में आध्यात्मिक मेले के अन्तर्गत विश्व परिवर्तन आध्यात्मिक सम्मेलन में मुख्य अतिथि भ्राता रमा प्रसन्न नायक, कुलपति जबलपुर विश्वविद्यालय बोलते हुए। मंच पर बैठे हैं भ्राता दीन दयाल खण्डेलवाल, नरेन्द्र गर्ग, रमेश भट्ट तथा दादी निर्मला शान्ता जी।

मुलुन्द (बम्बई) में आयोजित 'विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले' के अन्तर्गत व्यापारी समेलन में उद्योग पति भ्राता विश्वनाथ केडिया भाषण कर रहें है ब्र० कु० विष्णु भाई मंच पर बैठे हैं।

अलवर मेले के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित जनता ध्यान पूवर्क सुन रही है।

भठिंडा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ब्र० कु० बहन चित्रों पर समझा रही हैं

गुड़गांव ग्राम में माता के मेले में आयोजित प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या ब्र० कु० रामप्यारी चन्द्रभान (पंचायत सदस्य) को दे रही हैं। ↓

बुटवल नगर पंचायत के उपप्रधान पंच भ्राता यमबहादुर काकी जी अपनी सम्मति लिख रहे हैं

↓

Hली सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित मारवाड़
i गावास गाँव में शिव दर्शन प्रदर्शनी का उद्घाटन
भ्राता मिश्री लाल जी द्वारा किया जा रहा है।

mला पुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ब्र० कु० सोम-
Hा जी भ्राता नर्रासिह दास जी को परमात्मा का
Hचय दे रही हैं।

u ऊ समारोह में भ्राता कृष्ण स्वरूप वर्मा जी को
H हार अर्पित करते हुए बहन आशा जी तथा बहन
m जी। ↓

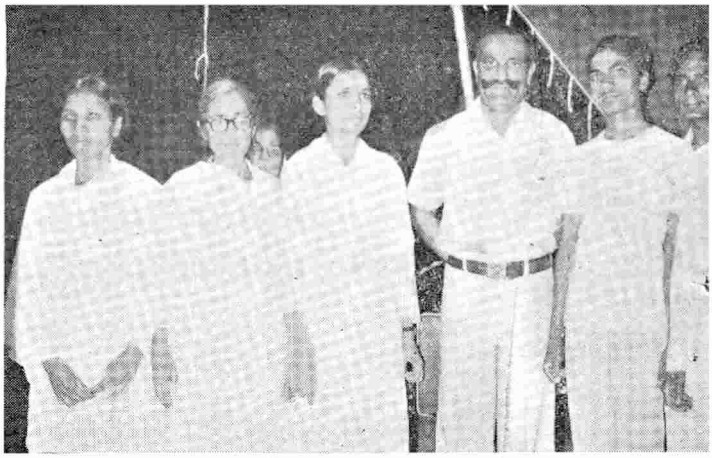

रांची के विशाल मोरा वादी मैदान में आयोजित फौजी मेले के अन्तर्गत लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर पर मेजर सूरज मल आहूजा जी, ब्र० कु० निर्मला तथा अन्य भाई बहन खड़े हैं।

बुटवल (नेपाल) में आयोजित प्रदर्शनी में भ्राता यम बहादर (उपप्रधान नगर पंचायत) तथा उनकी धर्मपत्नी, ब्र० कु० परिणीता द्वारा चित्रों की व्याख्या को बड़े ध्यान पूर्वक सुन रहे हैं।

जगदीशपुर (बस्तार) में आध्यात्मिक कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं भ्राता हरुसीकेश मिश्रा (कलैक्टर बस्तर) तथा ब्र० कु० कमलेश तथा सुशीला जी
↓

↑

अजमेर में अध्यात्मिक कार्यक्रम में ब्र० कु० सरोजनी प्रवचन कर रही हैं। मंच पर ब्र० कु० राधा तथा मुख्य अतिथि राजस्थान राजस्व मण्डल के सदस्य भ्राता दुर्गा लाल बाढ़दार तथा अन्य वक्ता गण बैठे हैं।

रोपड़ में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात एक साथ चित्र, ब्र० कु० राज के साथ अन्य दिखाई दे j

अमरावती सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित राजØ शविर (डॉक्टरों के लिए) के अवसर पर मंच पर बैठे हैं– लायन्ज कल्ब के अध्यक्ष डॉ० शिकनी जी, डॉ गिरीश पटेल, पुष्पा बहन, सीता बहन, नरेन्द्र भाई तथा मधुकर भाई।

← चित्र में कौन्ननगर सेवा केन्द्र की ओर से बाली के हरी सभा मंदिर में ब्र० कु० सौभाग्य, ब्र० कु० कमला (भाषण करते) उपस्थित हैं ।

जलगांव सेवा केन्द्र की ओर से आध्यात्मिक कार्य-क्रम में ब्र० कु० मीरा प्रवचन कर रही हैं। मंच पर ब्र० कु० पार्वती तथा अन्य वक्तागण बैठे हैं। →

← भावनगर सेवा केन्द्र की ओर से पालीतना में आयोजित स्नेह मिलन में जेसस कल्ब के प्रमुख आभार प्रकट कर रहे है। मंच पर ब्र० कु० गीता, ब्र० कु० गोबिन्द भाई ब्र० कु० गीता, डॉ बकराणिया, ब्र० कु० हंसमुख भाई तथा ब्र० कु० कान्ति भाई दिखाई दे रहे हैं।

T र चित्र में ब्र० कु० सरला जी बारेजा गीता
H शाला के नए मकान का उद्घाटन कर रहीं हैं तथा दाएं चित्र में

सरला बहन जी प्रवचन करते हुए।

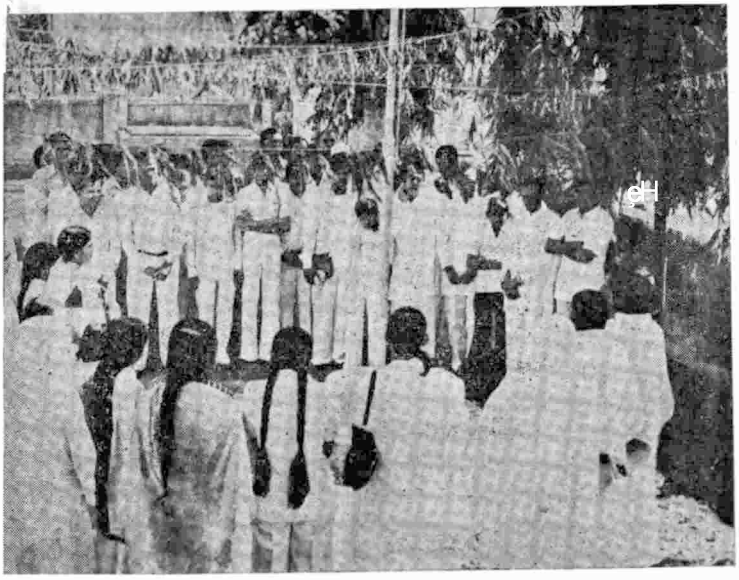

Y वनगर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित समारोह का उद्घाटन
G जारोहण करके कर रहे हैं भ्राता रसिक भाई शाह

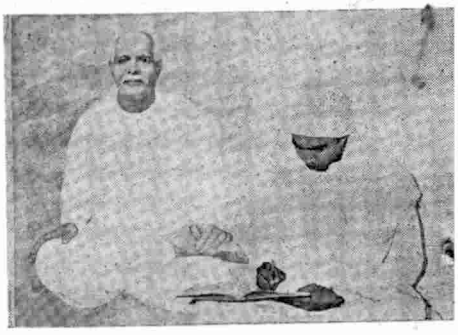

↑ श्री गंगा नगर में हुए समारोह के पश्चात श्री श्री १००८ स्वामी ब्रह्मदेव जी अपने विचार लिख रहे हैं

करनाल सेवा केन्द्र की ओर से बहुल शावना में आध्यात्मिक समारोह का उद्घाटन के पश्चात ब्र० कु० निर्मला, भ्राता महादेव शर्मा जी तथा अन्य शिव बाबा की याद में खड़े हैं

← ब्रह्माकुमारी बहने नार्थ इर्स्टन रेलवे के पब्लिक रीलेशन आफ़ीसर भ्राता सिद्धू जी, शम्भू प्रसाद शर्मा जी, जनसम्पर्क विभाग के अधिकारी भ्राता दुबे जी को शिव का परिचय देने के पश्चात दिखाई दे रही हैं।

मानसा मण्डी में प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के एस० डी० एम० भ्राता चावला जी ने किया, सब भाई बहन शिव बाबा की याद में खड़े हैं।

चित्र में ब्र० कु० कमल मारवाड़ रानावास में प्रदर्शनी में सर्वोदय छात्रावास के संस्थापक भ्राता मिश्री लाल जी को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

कोरापट के मंदिर में ब्र० कु० कमलेश जी ईश्वरीय संदेश देते हुए ज्ञान के एक बिन्दु पर समझा रही हैं।

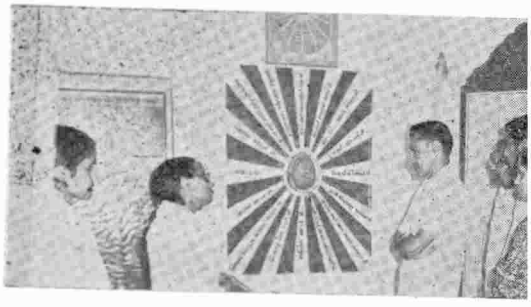

भावनगर सेवा केन्द्र पर गुजरात विद्युत बो[अधिकारी गण पधारे। ब्र० कु० गीता बहन। नयना बहन उनको शिव का परिचय दे रही हैं।

चिक्कोडी सेवा केन्द्र की ओर से संकेश्वर में प्रदर्शनी की गई। ब्र० कु० प्रभा जी ईश्वरीय संदेश दे रही हैं।

लखनऊ (हजरतगंज) द्वारा आयोजित प्रदर्शनी महात्मागण ने देखा, ब्र० कु० भगवती जी भी मंच बैठी हैं।

↑
चिकोडी सेवा केन्द्र की ब्र० कु० प्रभा जी संकेश्व
(कर्नाटक) के महिलाओं को ईश्वरीय सन्देश सुना रही हैं।

c आबू में बच्चों के लिए हुए राजयोग शिवर
c े गुजरात के बच्चों का ग्रुप। इन का लोक नृत्य
i ास) बच्चों के सांस्कृतिक कार्य-क्रम में सर्वो-
Δ

j सेवा केन्द्र में समारोह के अवसर पर डिस्ट्रिक्ट
c भ्राता जयचन्द प्रसाद जी ध्वजारोहण करते
n दिखाई दे रहे हैं, साथ में ब्र० कु० रानी, ब्र० कु०
e ा जी व अन्य भाई बहनें खड़े हैं।

↑ माऊँट आबू में 'शान्ति के लिए राजयोग सम्मेलन में भाग ले रहे हैं (बाएं से दाएं) कु० राधा, ब्र० कु० नलनी डा० बहन ललिता राव, राजयोगिनी दादी प्रकाश म राजयोगिनी दादी जानकी जी, प्रो० हरीष शुक्ला तथा कुमारी नेहा।

↓

↑
फतेहाबाद में आयोजित सम्मेलन के अवसर पर ब्र कु० शीला जी तहसीलदार जी को बैज पहना रही हैं।

प्रधान मन्त्री से मिलते हुए—ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, ब्र० कु० आशा और शकुन्तला बहन ज्योतिस्वरूप परमात्मा शिव का एक चित्र प्रधान मन्त्री को भेंट करते हुए तथा उन्हें महोत्सव के लिए निमन्त्रण देते हुए।

मुख्य सभा मण्डप के मंच पर एक दृश्य भारत के विभिन्न प्रदेशों तथा बाहर के बहुत-से देशों से आये ईश्वरीय विश्वविद्यालय के केन्द्रों पर राजयोग शिक्षा देने वाले ब्रह्माकुमारियाँ और ब्रह्माकुमार

मुख्य मण्डप में श्रोतागण के विशाल समूह एक भाग दिखाई दे रहा है।

ईश्वरीय संदेश देता हुआ शोभा यात्रा का एक खण्ड : "पवित्र बनो और योगी बनो" ।

देहली झांकी का सन्देश :
राजयोग का अभ्यास कीजिये,
दैवी-गुणों की धारणा कीजिये

जर्मनी—सतयुग और श्री कृष्ण आ रहे हैं। सभी सत्यों में सत्य महान: शिव हैं गीता के भगवान।"